सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) SUCI (C) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-38 अंक 2 | 22 जनवरी से 5 फरवरी, 2023 | मुख्य संपादकः कॉमरेड प्रभास घोष | कुल पृष्ठ : 8 | मूल्य : 4 रुपये

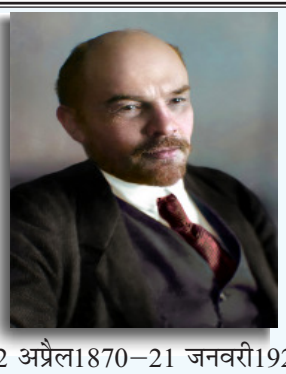

22 अप्रैल1870–21 जनवरी1924

महान लेनिन जिन्दाबाद !

''क्रांतिकारी सर्वहारा वर्ग के विचार बिन्दु के रूप में मार्क्सवाद विश्वव्यापी ऐतिहासिक मान्यता प्राप्त कर चुका है, क्योंकि पूंजीवादी युग की बहुमूल्य उपलब्धियों को ठुकराने के बजाय मार्क्सवाद ने दो हजार वर्षों के दर्मियान मानव-विचार और संस्कृति के विकास के फलस्वरूप संचित किये हुए सारे कीमती तत्वों को अपनाया है और उन्हें नया रूप प्रदान किया है। सर्वहारा अधिनायकत्व के व्यावहारिक अनुभव द्वारा प्रोत्साहित, इसी आधार पर और इसी दिशा में किये गये आगे के काम को–जो हर प्रकार के शोषण के खिलाफ सर्वहारा वर्ग का आखिरी संघर्ष है–सच्ची सर्वहारा संस्कृति का विकास होने की मान्यता दी जा सकती है।''

–लेनिन, (सर्वहारा संस्कृति के संबंध में)

कॉमरेड शिवदास घोष के जन्म शताब्दी वर्ष पर

उनकी अमूल्य शिक्षाएं

5 अगस्त 1923–5 अगस्त 1976

''व्यक्ति के स्वतंत्रता हासिल करने का संघर्ष, जिसे बुर्जुआ लोगों ने शुरू किया था, का हल नहीं हुआ है। व्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर जो हासिल हुआ है, वह है बुर्जुआ अर्थों में व्यक्ति का समानाधिकार यानी समाज में हर व्यक्ति को उसकी क्षमता के अनुसार समान अवसर मिलेगा। उस अवसर पर कोई रोक नहीं लगाएगा। लेकिन, व्यक्ति की व्यक्तिगत स्वतंत्रता का सवाल, जिसके लिए व्यक्ति का संघर्ष शुरू हुआ था, का हल नहीं हुआ। इसलिए यह सवाल बार-बार उठेगा ही कि व्यक्ति-स्वतंत्रता का हनन हो रहा है। सोवियत संघ में समाजवाद कायम होने के इतने दिनों बाद भी सोवियत समाज में यह सवाल उठा है। ऐसा नहीं है कि केवल राजनीतिक क्षेत्र में संशोधनवाद के कारण ऐसा हुआ है। ऐसा होना ही था। यहां व्यक्ति की स्वतंत्रता की आकांक्षा है–मैं जिस ढंग से अपनी बात कहना चाहता हूं, मुझे उस ढंग से कहने नहीं दिया जा रहा है। इसकी अनुमति कोई समाजवादी समाज बिल्कुल नहीं दे सकता। क्योंकि, इस मौके का फायदा उठाकर तरह-तरह के प्रतिक्रांतिकारी विचार सिर उठाते हैं। इसलिए इसकी अनुमति न देकर बिल्कुल सही काम किया जाता है। लेकिन इसकी अनुमति न देकर व्यक्ति की सही स्वतंत्रता का हनन और उसके हित का नुकसान नहीं किया जाता है और ऐसा क्यों नहीं किया जाता है, कैसे नहीं किया जाता है, यह समझाया जाना चाहिए।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

भारत में सत्तारूढ़ भाजपा की ''विकास यात्रा'' में कैसे सबसे आगे रखी हुई है ''नारी शक्ति''

''वित्तीय समावेशन से लेकर सामाजिक सुरक्षा, गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा से लेकर आवास, शिक्षा से लेकर उद्यमिता तक हमारी नारी शक्ति को सबसे आगे रखने के अनेक प्रयास किए गए हैं। ये प्रयास आने वाले समय में और भी अधिक उत्साह के साथ जारी रहेंगे।''–प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा। उससे संकेत लेते हुए केंद्रीय गृह मंत्री, वस्तुतः दूसरे नंबर के कमांडर अमित शाह ने शेखी बघारते हुए कहा, ''प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने महिला विकास की सोच को महिला नेतृत्व वाले विकास के संकल्प में बदल दिया है और अवसरों के द्वार खोल दिए।'' नारी शक्ति के उभार के रूप में अगर उनका आशय द्रौपदी मुर्मू को राष्ट्रपति और निर्मला सीतारमण को वित्त मंत्री बनाने से है, तो बेशक यह उनका विशेषाधिकार है। नहीं तो भारत में महिलाओं की स्थिति बहुत ही भयानक है।

अगर कोई दैनिक समाचार पत्र खोलता है, तो उसके पन्नों पर रोजाना महिलाओं के खिलाफ संगीन अपराधों की कम से कम चार से पांच घटनाएं होती हैं। लेकिन यह केवल वह संख्या है, जो रिपोर्ट की गई है। इनसे कई गुना अधिक संख्या में ऐसी वारदातों की रिपोर्ट ही नहीं की जाती है। अपराध, हत्या, अपहरण, बलात्कार, सामूहिक बलात्कार, दहेज के कारण होने वाली मौत, आत्महत्या, ऑनर किलिंग, घरेलू दुर्व्यवहार, यौन उत्पीड़न, एसिड हमले, कन्या भ्रूण हत्या, शिशुहत्या आदि इनसे भिन्न होते हैं। ''राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के अनुसार 2011 में महिलाओं के खिलाफ अपराध की 228,650 से अधिक घटनाएं दर्ज की गईं, जबकि 2021 में 87% बढ़कर 4,28,278 घटनाएं दर्ज की गईं।'' उसी ब्यूरो ने वर्ष 2020 की तुलना में 2021 में महिलाओं के खिलाफ अपराध की घटनाओं में 15.3% की वृद्धि होने की सूचना दी थी। हालांकि, पिछले छह सालों (2016-2021) में महिलाओं के खिलाफ अपराध के मामले 2016 में 338,954 मामलों से 26.35% बढ़ गये। 56,000 से अधिक मामलों के साथ, भाजपा-शासित उत्तर प्रदेश इस सूची में सबसे ऊपर है। 2021 में पुलिस ने 31,878 बलात्कार के मामले दर्ज किए–यह संख्या पिछले साल के मामलों (28,153) की तुलना में तेजी से बढ़ी है। हर साल बलात्कार के हजारों मामलों की रिपोर्ट के साथ, भारत ने ''दुनिया की बलात्कार राजधानी'' का उपनाम हासिल कर लिया है। पुलिस को 2021 में 137,956 महिलाओं से शिकायतें मिलीं–हर चार मिनट में लगभग एक बलात्कार हो जाता है। यह 2016 से 27% की वृद्धि है, जब 110,434 महिलाओं ने पुलिस से मदद मांगी थी। पुलिस ने 2021 में 6,795 दहेज हत्याएं दर्ज कीं–यानी औसतन हर 77 मिनट

(शेष पृष्ठ 7 पर)

दिल्ली के मुख्यमंत्री कार्यालय पर आशाओं की रैली

दिल्ली : 20 दिसम्बर को दिल्ली आशा वर्कर एसोसिएशन (दावा) यूनियन संबंधित एआईयूटीयूसी के बैनर तले सैकड़ों आशाओं ने दिल्ली के मुख्यमंत्री आवास विकास भवन-2 पर प्रदर्शन किया। आशाओं का यह प्रदर्शन सिविल लाइन से शुरू होकर

(शेष पृष्ठ 4 पर)

दिल्ली की सड़कों पर उतरीं आशा वर्कर्स

साम्प्रदायिक राजनीति सुभाष चंद्र बोस की विचारधारा की विरोधी

नेताजी की बेटी अनीता बोस पफ ने साक्षात्कार में कहा

जाने-माने पत्रकार अर्क भादुड़ी ने हाल ही में अपने जर्मनी दौरे के दौरान नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की बेटी अनीता बसु पफ के स्टैडबुर्गेन स्थित आवास पर जाकर उनका साक्षात्कार लिया। वह साक्षात्कार 'नागरिक डॉट नेट' पत्रिका में प्रकाशित हुआ। हम यहां उसके कुछ अंशों को प्रकाशित कर रहे हैं।

सवालः भारत की आजादी का 75वां साल चल रहा है। साथ ही यह सुभाष चंद्र बोस की 125वीं जयंती है। क्या आपको लगता है कि आजाद भारत ने उनके योगदान की सही मान्यता दी है?

अनीता बोस पफः मेरे पिता सुभाष चंद्र बोस ने भारत की आजादी के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन कुर्बान कर दिया था। लेकिन मुझे नहीं लगता कि 1947 में आजादी हासिल करने के बाद भारत उनके योगदान का उन्हें पूरा सम्मान दे पाया है। सुभाष चंद्र बोस और आजाद हिंद फौज (आईएनए) के योगदान को आज भी सही से मान्यता नहीं मिली है। भारतीय आजादी आन्दोलन की दो धाराएं थीं। एक धारा अहिंसा में यकीन रखती थी, तो दूसरी गैर समझौतावादी संघर्ष में। मेरे पिता दूसरी धारा के उज्जवलतम प्रतिनिधि थे।

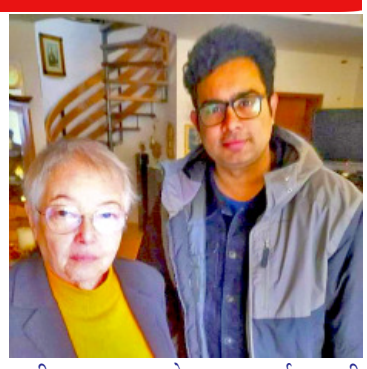

अनीता बसु पफ के साथ अर्क भादुड़ी

कई दशकों से यह प्रचार चल रहा है कि भारत की आजादी का श्रेय अहिंसात्मक धारा को जाता है। यह

(शेष पृष्ठ 2 पर)

कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाएं ...

(पृष्ठ 1 का शेष)

इसे दिखाने के लिए यह दिखाना जरूरी है कि व्यक्ति-स्वतंत्रता और मुक्ति का रास्ता ऐतिहासिक रूप से सही मायने में कहां निहित है और कैसे निहित है। यह दिखाना होगा कि समाजवादी समाज में व्यक्ति-स्वतंत्रता हासिल करने के लिए अलग से क्यों किसी संघर्ष की जरूरत नहीं है। यह दिखाना होगा कि यहां सामाजिक स्वार्थ के साथ व्यक्ति-स्वार्थ के द्वन्द्व की प्रकृति क्या है और उस द्वन्द्व को कैसे हल करना है। अगर इन सवालों से संबंधित सही सिद्धांत विकसित न किये जा सकें, तो समाजवादी समाज के समग्र विकास के पूरक सामाजिक मानसिकता का निर्माण कैसे होगा? ...बहुतों को लगता है कि इन सब चीजों की जरूरत नहीं है। यह सब नहीं होने से भी काम चल जायेगा। लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगता। वर्ना क्या केवल ज्ञान बघारने के लिए ही लेनिन को 'मेटेरिअलिज्म एंड इम्पीरियो क्रिटिसिज्म' नामक पुस्तक लिखनी पड़ी थी? मेरा मानना है कि इन्टेलेक्चुअल लेवल पर यानी ज्ञान जगत के तमाम क्षेत्रों में अगर क्रांति प्रतिक्रियावादियों को पूरी तरह से परास्त न कर पाये, तो सड़कों पर जो संघर्ष होता है, वह ज्यादा दूर आगे नहीं बढ़ पाता है, उसका मुंह के बल गिरना तय है। कोई सैन्य संघर्ष, कोई सशस्त्र युद्ध जीतने का मतलब ही क्रांति नहीं है। क्रांति है समाज में तेजी से बदलाव लाकर समाज की निरंतर प्रगति को जारी रखना। अगर यह काम समग्र रूप में नहीं किया गया, तो क्रांति आगे नहीं बढ़ सकती। यही वजह है कि पूर्वी यूरोप में दूसरों की मदद से सत्ता पर कब्जा कर क्रांति को अंजाम दिये जाने के बाद आज वह मुंह के बल गिर गयी है। ऐसा ही कुछ वियतनाम की धरती पर भी हो सकता है। आज वियतनाम के लोग अमेरिकी साम्राज्यवाद के खिलाफ कितना बड़ा संघर्ष कर रहे हैं, कितने बड़े नैतिक बल का परिचय दे रहे हैं। उन्होंने एक ऐतिहासिक शिक्षाप्रद संघर्ष कर दिखाया है। लेकिन, मुझे नहीं पता कि उन्होंने सैद्धांतिक रूप से कितना कुछ किया है। हो सकता है कि उन्होंने वैसा किया हो। लेकिन अगर ऐसा हो कि वे सिद्धांत को विकसित करने में पीछे रह गये हों, केवल आजादी की लड़ाई ही लड़ते जा रहे हों, तो बाद में उनके लिए बड़ी दिक्कत होगी। जैसा कि चीनी क्रांति बाद में बड़ी कठिनाई का सामना कर रही है। देश की आजादी के आह्वान को हर कोई समझता है और आसानी से उस संघर्ष का हिस्सा बन जाता है। लेकिन अगर कम्युनिस्टों के लिए भी उनकी समग्र समझ यहीं तक बेहतर रहे, उससे आगे हर कोई अपने तरीके से समझता रहे, तो हजार जान कुर्बान करने के बाद भी वह क्रांति आखिरकार आगे नहीं बढ़ेगी। लेनिन ने भी यही बात कही थी। लेनिन की शिक्षा का अनुसरण करते हुए ही माओ त्से-तुंग ने भी सांस्कृतिक क्रांति के दौरान कहा कि राजसत्ता पर कब्जा करने की क्रांति में दुश्मन को सीधे पहचाना जा सकता है, लोगों को अपेक्षाकृत आसानी से समझाया जा सकता है कि दुश्मन कौन हैं, किनके खिलाफ और कैसे लड़ना है। लेकिन समाजवादी समाज में मामला काफी जटिल हो जाता है। क्योंकि, वहां दुश्मन अपने भीतर रहता है, पुराने बुर्जुआ समाज के तरह-तरह के प्रतिक्रियावादी विचार और बुर्जुआ चिंतन व संस्कृति द्वारा प्रभावित लोगों के बीच रहता है। वहां जब लोगों को यह बताने की कोशिश की जाती है कि क्या करना है, तो लोगों के बीच से ही बाधा आती है। क्रांति का यह दौर बहुत जटिल है।...

मैंने जिस बात को स्पष्ट तौर पर कहना चाहा है, वह यह है कि आप सिर्फ लेनिन के बातों में नहीं, बल्कि लेनिनवादी विचार-विश्लेषण पद्धति में महारत हासिल करने का प्रयास करें। जब विद्वतजन केवल लेनिन का उद्धरण पेश कर ज्ञान बघारने की कोशिश करेंगे, तब आप उनके बारे में पता करेंगे–मैं यह बात हमारी पार्टी के सभी कार्यकर्ताओं व नेताओं के लिए कह रहा हूं–कि लेनिन ने अपनी उन बातों को कहने के लिए जिस विचार- विश्लेषण पद्धति का अनुसरण किया था, उस विचार-विश्लेषण पद्धति में उन्होंने महारत हासिल की है या नहीं? अगर इसमें महारत हासिल कर ली गयी है, तो जिस तरह से बातें कहनी चाहिए थीं, वे उस तरह से कह रहे हैं या नहीं–यही है बुनियादी बात। ऐसा कर पाने से लेनिनवाद में महारत हासिल हो जायेगी। अगर हम लेनिनवाद में महारत हासिल कर लेते हैं, तो हम अपने देश की विशेष परिस्थितियों में लेनिनवाद को लागू करने में सक्षम होंगे। इसमें सिर्फ नेताओं को महारत हासिल करने से ही नहीं होगा। अगर सभी कार्यकर्ता इसमें महारत हासिल न कर पायें, कम से कम कार्यकर्ताओं की एक बड़ी संख्या अगर इसमें महारत हासिल न कर पाये, यानी हम पार्टी के तौर पर हासिल न कर पायें, तो हमारे काम की रफ्तार बहुत धीमी हो जायेगी। इच्छा-शक्ति और चरित्र रहने के बावजूद, बुनियादी विश्लेषण और बुनियादी सिद्धांत सही रहने के बावजूद इस प्रतिकूल परिस्थिति में भी हम जो रफ्तार बना सकते थे, वह हम नहीं बना पायेंगे और इस प्रकार कार्यकर्ताओं की संगठनात्मक क्षमता में कमी आयेगी।..."

(महान नवम्बर क्रांति की 54वीं वर्षगांठ के अवसर पर 16 नवम्बर, 1971 को कोलकाता के महाजाति सदन हॉल में दिये गये भाषण के चुनिन्दा अंश का हिन्दी रूपान्तर)

नेताजी की बेटी से साक्षात्कार..

(पृष्ठ 1 का शेष)

सही नहीं है। सशस्त्र स्वतंत्रता सेनानियों की भी आजादी आन्दोलन में बड़ी भूमिका थी। सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में आजाद हिंद फौज का ऐतिहासिक संघर्ष स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में हमेशा स्वर्णाक्षरों में लिखा रहेगा। लाल किले में आजाद हिंद फौज (आईएनए) के क्रांतिकारी लड़ाकों पर चले मुकदमे के दौरान उनकी रिहाई की मांग को लेकर पूरा देश उद्वेलित हो उठा था। वे लोग नौ सेना विद्रोह के प्रेरणास्रोतों में से एक थे। इन विषयों पर अधिक से अधिक चर्चा-अनुशीलन की जरूरत है।

लेकिन मैं एक बात कहना चाहती हूं। पिताजी की यादें इतिहासकारों या राजनैतिक नेताओं की भूमिका की मोहताज नहीं हैं। भारत के करोड़ों आम लोग पिताजी की यादों को दिल में संजोये हुए जीते हैं। इतने सालों बाद भी सुभाष चंद्र बोस करोड़ों लोगों के जीवन के आदर्श हैं। उनके जैसे किसी स्वतंत्रता सेनानी की इससे बड़ी और कोई उपलब्धि नहीं हो सकती।

सवाल : जब भारत में चुनाव आते हैं, तो बहुत-सी राजनैतिक पार्टियां सुभाष चंद्र बोस के बारे में चर्चा करती हैं, चुनाव प्रचार में उनकी तस्वीर का इस्तेमाल किया जाता है। हाल ही में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दिल्ली में सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा का अनावरण किया। आप इसे कैसे देखती हैं?

अनीता: मैं भारत की पल-पल की जानकारी रखती हूं। चुनावों से पहले विभिन्न राजनैतिक पार्टियां पिताजी को लेकर उछल-कूद करती हैं, उनकी तस्वीर का इस्तेमाल करती हैं, मुझे यह सब पता है। मुझे इस संबंध में ज्यादा कुछ नहीं कहना है। सुभाष चंद्र बोस को तो उनके देश के लोग आदर करेंगे ही। राजनैतिक पार्टियां भी तो देश का ही हिस्सा हैं। लेकिन यह आदर-सम्मान वास्तविक होना चाहिए। मेरे पिताजी कांग्रेस अध्यक्ष थे। उन्होंने फॉरवर्ड ब्लॉक पार्टी की स्थापना की थी। कांग्रेस से निकलकर ही तृणमूल कांग्रेस बनी है। लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगता कि कांग्रेस ने सुभाष चंद्र बोस की कुर्बानी को मान्यता देने में कोई बहुत ज्यादा दिलचस्पी दिखाई है।

मैं दिल्ली में पिताजी की प्रतिमा के अनावरण समारोह में नहीं गयी थी। प्रधानमंत्री ने 8 सितम्बर को प्रतिमा का अनावरण किया, मुझे 3 सितम्बर को आमंत्रण पत्र मिला। मैं यह भी नहीं समझ पायी कि इसके लिए 8 सितम्बर की तिथि को ही क्यों चुना गया। उस तिथि के साथ सुभाष चंद्र बोस का कोई जुड़ाव नहीं है।

एक और बात कहना चाहूंगी। सुभाष चंद्र बोस ने एक स्वतंत्र व धर्मनिरपेक्ष भारत का सपना देखा था। उनके आईएनए में धार्मिक भेदभावों का कोई स्थान नहीं था। साम्प्रदायिक राजनीति से उनकी विचारधारा बिल्कुल मेल नहीं खाती है। धार्मिक भेदभावों की राजनीति और सुभाष चंद्र बोस की विचारधारा एक-दूसरे की विरोधी हैं।

सवाल: कई लोग शिकायत करते हैं कि हाल के दिनों में भारत में धर्मनिरपेक्षता पर हमले हो रहे हैं। इस पर आपके विचार क्या हैं?

अनीता: इस संदर्भ में मैं अपने पिता के राजनीतिक और व्यक्तिगत व्यवहार के बारे में बता सकती हूं। जैसा कि मैंने पहले ही कहा कि सुभाष चंद्र ने जिस स्वतंत्र भारत का सपना देखा था, वह एक धर्मनिरपेक्ष राज्य था। यह मामला काफी महत्वपूर्ण है। धर्म एक निजी मामला है, लेकिन राज्य को धर्मनिरपेक्ष होना चाहिए। उसे सभी नागरिकों के अधिकारों और सम्मान की रक्षा करनी चाहिए। अगर किसी देश में ऐसा नहीं होता है, तो वह काफी दु:ख की बात है। बंटवारे की राजनीति मेरे पिता के राजनीतिक आचरण-व्यवहार और विचारधारा के खिलाफ है। उन्होंने जब जोखिम भरी पनडुब्बी की यात्रा की, तब उनके साथी के रूप में एक मुसलमान थे। उनकी अंतिम विमान यात्रा में भी उनके साथ एक मुसलमान साथी थे। आईएनए में किसी भी धार्मिक अभिवादन के लिए कोई जगह नहीं थी, केवल एक ही अभिवादन था 'जय हिंद'। इन बातों को ध्यान में रखना जरूरी है।

सवाल: अपनी मां के बारे में कुछ बताएं। कैसे उन दोनों का मिलना हुआ?

अनीता: मेरी मां का जन्म 1910 में हुआ था। जब वे 24 साल की थीं, तब पिताजी उनसे मिले। 1934 में पिताजी इलाज के लिए वियना में थे। मांडले और बर्मा की जेलों में रहने के दौरान वे बहुत बीमार पड़ गये थे। ब्रिटिश सरकार ने सशर्त इलाज के लिए उन्हें वियना आने की इजाजत दी। वियना में रहने के दौरान पिताजी एक पुस्तक लिख रहे थे और उसके लिए एक सचिव की तलाश कर रहे थे। एक भारतीय छात्र ने उन्हें मेरी मां के बारे में बताया। मां बतौर उनके सचिव काम पर लग गयीं। कुछ ही दिनों में वे एक-दूसरे के प्रति आकर्षित हो गये।

तीसरे दशक के उत्तरार्ध में पिताजी लगभग पूरा समय भारत में रहे। 1938 में वे कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये। 1939 में उन्होंने महात्मा गांधी द्वारा समर्थित उम्मीदवार पट्टाभि सीतारमैय्या को परास्त कर दुबारा अध्यक्ष बने। इसके बाद द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू हो गया। 1941 में मेरे पिताजी ने फिर जर्मनी में कदम रखा। फिर वे 1943 में पनडुब्बी से जापान चले गये। मेरा जन्म 1942 में हुआ।

सवाल: द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान सुभाष चंद्र बोस की राजनीतिक गतिविधियों और विभिन्न देशों के साथ सम्पर्क कायम करने के बारे में कुछ बताना चाहेंगी?

अनीता: मेरे पिता का पहला और अंतिम लक्ष्य था अपनी मातृभूमि की आजादी हासिल करना। वे अंग्रेजी शासन के खात्मे के लिए सबकुछ करने को तैयार थे। विश्वयुद्ध छिड़ने के बाद उन्होंने महसूस किया कि अब सही समय आ गया है। अब कोने में धकेल दिये गये अंग्रेजों से आजादी छीन लेने का समय आ गया है। सुभाष चंद्र को यह भी लगा था कि देश में रहकर यह काम संभव नहीं है। देश के बाहर से उन पर चोट करनी होगी।

आजादी आन्दोलन के आखिरी दौर में उन्होंने विदेशी मदद की आवश्यकता महसूस की थी। उनकी पहली पसंद का देश सोवियत संघ था। याद रखने की जरूरत है कि वे सोवियत संघ से होकर ही जर्मनी आये थे। लेकिन परिस्थिति तेजी से बदल रही थी। सोवियत संघ उनकी मदद नहीं कर सका। ऐसी स्थिति में भारत की आजादी के लिए उन्होंने जर्मनी, जापान और इटली से मदद ली। बेशक इन देशों से मदद लेना उनकी 'ग्रेट चॉइस' (सही पसंद) नहीं थी। लेकिन अगर हम इतिहास पर नजर डालें, तो हम देखेंगे कि इसके सिवा उनके लिए और कोई रास्ता नहीं था। भारत की आजादी के लिए वे ब्रिटेन के दुश्मन खेमे की मदद चाहते थे। उस खास वक्त में उन्हें ब्रिटेन के दुश्मनों की ही मदद लेनी पड़ी थी।

यह दोहराने की जरूरत नहीं है कि सुभाषचन्द्र फासिस्ट नहीं थे। जब जर्मनी ने सोवियत संघ पर हमला किया, तो पिताजी काफी विचलित हो गये थे। इसकी वजह से उनकी कई योजनाएं प्रभावित हुईं। जर्मनी में आजाद हिंद फौज (आईएनए) की जो शाखा थी, उसको साफ निर्देश दिया गया था कि वे सिर्फ अंग्रेजों के खिलाफ लड़ेंगे। नतीजतन, वे कभी रूस में लड़ने नहीं गये। अत्यंत जटिल भू-राजनीतिक परिस्थिति का सामना करते हुए सुभाष चंद्र ने विश्वयुद्ध के दौरान भारत की आजादी के लिए कुछ कदम उठाये थे।

सवाल: सुभाष चंद्र बोस की राजनीतिक विचारधारा आज के भारत में कितनी प्रासंगिक है?

अनीता: मेरे पिता वामपंथी थे। यह सही है कि वे कम्युनिस्ट नहीं थे और न ही वे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बने थे, लेकिन वे वैचारिक तौर पर वामपंथी थे। पिताजी धर्मनिरपेक्षता की विचारधारा में यकीन रखते थे और महिलाओं के सशक्तीकरण पर जोर दिया करते थे। उन्होंने 1940 के दशक में आजाद हिंद फौज में महिला रेजिमेंट बनायी थी, जिसका नेतृत्व लक्ष्मी स्वामीनाथन (बाद में कम्युनिस्ट नेता लक्ष्मी सहगल) ने किया था। पिताजी का मानना था कि एक धर्म का दूसरे धर्म से भेदभाव नहीं होना चाहिए। राज्य को सभी धर्मों के मानने वालों के लिए समान अधिकार सुनिश्चित करना चाहिए। मुझे लगता है कि ये सारी बातें आज के भारत के लिए अत्यंत प्रासंगिक और महत्वपूर्ण हैं। ●

भारत में मजदूर आन्दोलन में नेताजी सुभाष चंद्र बोस का योगदान

23 जनवरी, 2023 को सुभाष चंद्र बोस की 126वीं जयंती है, जिन्हें 'नेताजी' के नाम से जाना जाता है। नेताजी हमारे देश में दमनकारी ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ भारत के आजादी आंदोलन की गैरसमझौतावादी धारा के साक्षात् उदाहरण थे।

आजादी आंदोलन में अपने घटनापूर्ण वर्षों के दौरान नेताजी के पास भारत में मजदूर वर्ग के आंदोलन के बारे में एक विचारशील समझ और स्पष्ट दृष्टि थी। अपने राजनीतिक गुरु देशबंधु चितरंजन दास से प्रेरित होकर वे 1922 में लाहौर ट्रेड यूनियन कांग्रेस से जुड़े थे। 1929 में नेताजी को ऑल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (एटक) के नागपुर में आयोजित 10वें राष्ट्रीय सम्मेलन में अध्यक्ष के रूप में चुना गया था। आजादी से पहले के दौर में एटक औपनिवेशिक भारत के मेहनतकश लोगों का एकमात्र संयुक्त मंच था, न कि किसी राजनीतिक संगठन का ट्रेड यूनियन संगठन, जैसा कि यह अब है। वे कोलकाता, मुंबई, नागपुर, जमशेदपुर और बोकारो में कई ट्रेड यूनियन आंदोलनों से घनिष्ट रूप से जुड़े हुए थे।

1928 में नेताजी टाटा स्टील वर्कर्स यूनियन के अध्यक्ष चुने गए थे और 1937 तक वे उस पद पर बने रहे। उन्होंने स्टील वर्करों के लिए विभिन्न श्रम कल्याण और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की मांग को लेकर 1928 में टाटा स्टील के श्रमिकों की सफल हड़ताल के आंदोलन का नेतृत्व किया। उनके निडर और अथक संघर्ष के परिणामस्वरूप 1934 में टाटा स्टील के श्रमिकों के लिए पहली बार लाभ साझा करने वाला बोनस समझौता हुआ। नेताजी के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं के अदम्य साहस व दृढ़ संकल्प के आगे प्रबंधन को अंततः झुकना पड़ा।

नेताजी ने भारतीय ट्रेड यूनियन आंदोलन पर विस्तार से लिखा। उन्होंने एक समाजवादी कार्यक्रम पर किसान-मजदूरों के संगठन बनाने की वकालत की। वे भारतीय ट्रेड यूनियनों की आंतरिक शक्तियों के बारे में बहुत आशावादी थे और भारत में ब्रिटिश-साम्राज्यवादी शासन के खिलाफ ट्रेड यूनियन शक्ति के इस्तेमाल की वकालत करते थे। नेताजी के अनुसार, श्रम की संगठित ताकतों (किसानों सहित) को भारत की राजनीतिक मुक्ति के कारण को बढ़ावा देने के लिए प्रयास करना चाहिए। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर ट्रेड यूनियनों को एक ढीला महासंघ बनना है, तो यह भारत के मजदूर वर्ग के लिए आत्मघाती होगा। जब अन्य सभी तरीके विफल हो जाते हैं, तो अपनी

शिकायत को दृढ़ता से व्यक्त करने और अपने वैध अधिकार प्राप्त करने के लिए उन्होंने हड़तालों को शोषित -पीड़ित मजदूर वर्ग के हाथों में एक प्रभावी हथियार के रूप में माना। नेताजी को भारत में कुछ प्रमुख हड़तालों का नेतृत्व करने का श्रेय वास्तविक कारणों से बड़ी सफलता के लिए मिला है।

नेताजी ने औद्योगिक संबंधों में त्रिपक्षीयता की पुरजोर वकालत की और मेहनतकश जनता की सामाजिक सुरक्षा की गारंटी पर पूरी ताकत के साथ जोर दिया। उन्होंने ट्रेड यूनियन समितियों में बाहरी (गैर-कर्मचारी) नेतृत्व को प्रतिबंधित करने के लिए भारतीय ट्रेड यूनियन अधिनियम 1926 में संशोधन करने के रॉयल कमीशन ऑफ लेबर के प्रस्ताव का कड़ा विरोध किया। नेताजी भारतीय मेहनतकश लोगों की कमजोर स्थिति से पूरी तरह वाकिफ थे और इसीलिए उन्होंने उक्त संशोधन का विरोध किया।

नेताजी ने एक ऐसे आजाद भारत की कल्पना की थी, जिसमें प्रत्येक नागरिक को काम करने का अधिकार हो और चाहे कोई भी पेशा हो, उसमें जीने लायक मजदूरी का अधिकार हो, न कि केवल न्यूनतम मजदूरी। उन्होंने समान काम के लिए पुरुषों और महिलाओं के लिए समान वेतन की भी मांग की थी। उनके लगातार प्रयासों के कारण टाटा स्टील प्रबंधन को महिला कर्मचारियों के लिए मातृत्व लाभ लागू करने और टाटा कर्मचारियों की सभी श्रेणियों के लिए ग्रेच्युटी और पेंशन का विस्तार करने को मजबूर होना पड़ा था।

4 जुलाई 1931 को ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (एटक) के कलकत्ता अधिवेशन में अपने प्रसिद्ध भाषण में नेताजी ने घोषणा की थी, "मेरे मन में कोई संदेह नहीं है कि दुनिया की तरह भारत का उद्धार, समाजवाद पर निर्भर करता है...।"

जून 1933 में लंदन में तीसरे भारतीय राजनीतिक सम्मेलन में अपने अध्यक्षीय भाषण में नेताजी ने घोषणा की, "आजाद भारत पूंजीपतियों और जमींदारों की भूमि नहीं होगी।"

नेताजी मजदूरों की साक्षरता को बहुत महत्वपूर्ण मानते थे। वे अक्सर किसान-मजदूरों को साम्प्रदायिक झगड़ों से दूर रहने की चेतावनी देते थे। उन्होंने धर्मनिरपेक्ष और वैज्ञानिक शिक्षा को कट्टरता को दूर करने और आर्थिक चेतना की शुरुआत करने के साधन के रूप में माना था। 'एक आजाद भारत की दृष्टि' (1928) में उन्होंने कहा था, "एक मुस्लिम किसान और एक मुस्लिम जमींदार की तुलना में एक हिंदू किसान और एक मुस्लिम किसान के बीच बहुत कुछ समान है।"

हमारे देश का एकमात्र क्रांतिकारी ट्रेड यूनियन संगठन होने के नाते ऑल इंडिया यूनाइटेड ट्रेड यूनियन सेंटर (एआईयूटीयूसी) को नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती उपयुक्त तरीके से मनाने की जरूरत है ताकि मेहनतकश लोगों को हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम की गैर-समझौतावादी धारा के इस महान क्रांतिकारी सेनानी के जीवन-संघर्ष और शिक्षाओं और खासकर औपनिवेशिक भारत में मजदूर आंदोलनों में उनके अपार योगदान के बारे में जानने की ललक पैदा करने के लिए प्रेरित किया जा सके। इस विचार को मौजूदा बेरहम पूंजीवादी शोषण के जुए से निजात पाने के संघर्ष में मेहनतकश जनता की वर्तमान जरूरतों के साथ एकीकृत करना होगा।

बिजली उपभोक्ताओं के हित के खिलाफ है स्मार्ट प्रीपेड मीटर

केंद्रीय भाजपा सरकार के विद्युत अधिनियम 2003 संशोधन विधेयक 2022 की धारा 28 और 32 में कहा गया है, "Provided that no electricity shall be scheduled or despatched under such contract unless adequate security of payment, as may be prescribed by the central government, has been made." अर्थात बशर्ते कि ऐसे अनुबंध के तहत कोई बिजली निर्धारित या प्रेषित नहीं की जाएगी, जब तक कि केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित भुगतान की पर्याप्त सुरक्षा नहीं की जाती है।" इसका मतलब है कि बिजली उत्पादन कंपनियां भुगतान सुरक्षा की गारंटी के बिना बिजली पारेषण कंपनियों को बिजली नहीं बेच सकती हैं। इसी प्रकार, विद्युत पारेषण कंपनी अग्रिम भुगतान की सुरक्षा की गारंटी के बिना विद्युत वितरण कंपनी को बिजली नहीं बेच सकती है। फिर, बिजली वितरण कंपनियां अग्रिम भुगतान की गारंटी के बिना उपभोक्ताओं को बिजली नहीं बेच सकती हैं। स्मार्ट स्लिप्ड मीटर के माध्यम से अग्रिम बिजली का दाम देंगे, तभी बिजली का कनेक्शन बना रहेगा। जैसा कि आप जानते हैं कि यह विधेयक अभी तक संसद से पारित नहीं हुआ है और कानून बन गया है। लेकिन आप देखिए देश के विभिन्न राज्यों में ये मीटर लगाने का प्रयास शुरू हो गया है। लगभग सभी प्रखंडों में लघु उद्योग, दुकान-दर-दुकान, घर-घर सर्वे किया जा रहा है। पश्चिम बंगाल राज्य सरकार ने 1 जुलाई 2021 को उच्च स्तरीय बैठक में निर्णय लेने के बाद इन मीटरों को लगाने का काम शुरू किया। इसके फैसले में स्पष्ट रूप से इन स्मार्ट स्लिप मीटरों को पहले सरकारी संस्थानों, औद्योगिक बिजली उपभोक्ताओं, फिर वाणिज्यिक और कृषि बिजली उपभोक्ताओं और फिर घरेलू बिजली उपभोक्ताओं के मकानों पर लगाने की योजना बताई गई है। राज्य सरकारों की रणनीति के तहत पहले से ही वे जिन मीटरों को लगाने को कह रही हैं, उनमें बिजली वितरण कंपनियों के स्मार्ट मीटर हैं। यानी उनका कहना है कि ये मीटर प्रीपेड मीटर नहीं हैं। जैसा कि सभी जानते हैं स्मार्ट मीटर स्लिप पेड और पोस्ट पेड दो तरह के होते हैं। कंपनी मीठी-मीठी उन्नत तकनीक द्वारा ग्राहकों की स्वीकृति जीतने की कोशिश कर रही है।

ऐसे में लोगों को गुमराह करने के लिए असम सरकार की पहल पर राज्य के हर घर में स्मार्ट मीटर लगाए गए। इनमें से अधिकांश पोस्टपेड के रूप में थे, लेकिन प्रीपेड के रूप में जब बिल आने शुरू हुए, तो देखा गया कि ये पहले से 3/4 गुना या उससे अधिक रकम के थे। बिलों के अत्याचार से बोझिल जीवन के सभी क्षेत्रों के ग्राहकों द्वारा लगातार आंदोलन के कारण असम सरकार पीछे हट गई। पश्चिम बंगाल में भी वही कोशिश जारी है। उपभोक्ता आवाज उठाएं, हम स्मार्ट मीटर नहीं लगवाएंगे। यह समझा जाना चाहिए कि यह मीटर एक बार लग जाने के बाद मीटर के सॉफ्टवेयर को सक्रिय करके ही इसे प्रीपेड में बदला जा सकता है। बड़ा खतरा होगा। यह स्मार्ट प्रीपेड मीटर ग्राहक के हित के खिलाफ क्यों है? पहले कनेक्शन के लोड के आधार पर पैसा जमा किया जाए, तभी मीटर से बिजली कनेक्ट की जाएगी। यानी बिजली वितरण कंपनी ग्राहकों के खर्चे पर बिजली वितरण का कारोबार करेगी, जो अनैतिक और अनुचित है। दूसरे, मीटर का पैसा खत्म होने के सात दिन पहले मोबाइल पर दोबारा पैसे जमा करने का नोटिस आएगा। पैसा जमा करोगे, तो निर्बाध बिजली मिलेगी। अगर पैसा जमा नहीं किया गया, तो पैसा जमा न होने के बाद बिजली का कनेक्शन काट दिया जायेगा। यानी आपने कितनी यूनिट बिजली किस रेट पर खर्च की, इसका हिसाब लेने का कोई सिस्टम नहीं है। न केवल बिजली की दरें, बल्कि ग्राहक को मीटर किराए, लगाये गए शुल्क आदि के लिए कितनी राशि वसूली जा रही है, इसके बारे में कुछ भी पता नहीं चलेगा। इससे वितरण कंपनी के पास ग्राहक को अंधेरे में रखकर व्यावहारिक रूप से पैसे लूटने का मौका होगा, जो नहीं होने दिया जा सकता। तीसरे,वर्तमान में देश में जब चौतरफा भ्रष्टाचार व्याप्त है, तब किसी भी सरकारी परियोजना के अनुभव के बारे में हर कोई चिंतित और निराश है। इन स्थितियों में खराब मीटर या बंद मीटर को बदलना और खराब या बंद मीटर के लिए अनुचित बिजली बिल आना शामिल हैं।

पीड़ित ग्राहक कटु अनुभव से जानते हैं कि सुधार करना कितना कठिन, समय लेने वाला और लगभग असंभव है। स्मार्ट प्रीपेड मीटर के मामले में अगर आप इसके बारे में सोचते भी हैं, तो आपको घबराना ही पड़ता है। नतीजतन, यह मीटर केवल वितरण कंपनी के मुनाफे के हित में काम करेगा, न कि ग्राहक के हित में। चौथे, नया बिजली कनेक्शन लेते समय प्रत्येक ग्राहक द्वारा हस्ताक्षरित लिखित अनुबंध, घरों के लिए 220 वोल्ट, कृषि और उद्योग के लिए 440 वोल्ट और घरों के लिए 240 वोल्ट की 24 घंटे बिजली आपूर्ति की जिम्मेदारी होती है। लेकिन क्या कोई बिजली उपभोक्ता है, जो अपने व्यावहारिक अनुभव से कह सके कि वितरण कंपनी इस शर्त को पूरा करने में लापरवाही नहीं कर रही है? क्या बिजली आपूर्ति वोल्टेज सही है? कम या ज्यादा नहीं है? क्या कोई लोड शेडिंग नहीं है? बिजली सेवा जिसके लिए बिजली मापने के लिए स्मार्ट प्रीपेड मीटर लगाए जाएंगे। अगर बिजली उपभोक्ता इतना ही अनस्मार्ट है, तो उस स्मार्ट मीटर में बिजली की खपत का माप सटीक हो सकता है, लेकिन इस परम अनस्मार्ट बिजली आपूर्ति की सेवा को मापने वाला स्मार्ट मीटर किसी भी तरह से उपभोक्ताओं को स्वीकार्य नहीं हो सकता है। पांचवें, अगर अभी जो मीटर लगा है, वह अच्छा है, तो नया और महंगा मीटर लगाने की क्या जरूरत है? क्योंकि मौजूदा मीटरों को खरीदने में जो पैसा खर्च होता है, वह ग्राहकों के बिजली क्षेत्र से लिया जा रहा है। उन्नत तकनीक की बात करें, तो काफी अधिक कीमत पर स्मार्ट प्रीपेड मीटर खरीदने के लिए आवश्यक धन बिजली बिलों के माध्यम से जुटाया जाएगा। यानी इसके नतीजतन बिजली के दाम फिर से बढ़ाने का बंदोबस्त किया जा रहा है, जो उपभोक्ताओं के हितों के खिलाफ है। उपरोक्त चर्चा से, ऐसा कोई कारण नहीं है जिससे कि यह समझना मुश्किल हो कि स्मार्ट मीटर लगाने की इजाजत क्यों नहीं दी जानी चाहिए।

वक्त का तकाजा है कि बिजली उपभोक्ता-विरोधी इस स्मार्ट मीटर को लगाने के खिलाफ सभी बिजली उपभोक्तों को जागरूक करने की जिम्मेदारी लें, स्मार्ट मीटर लगाने के खिलाफ आस-पड़ोस में जनमत तैयार करें।

निर्माण श्रमिकों का केरल राज्य सम्मेलन

कोट्टायम (केरल) : केरल निर्माण श्रमिक यूनियन का राज्य सम्मेलन 8 जनवरी को शुरू हुआ। एआईयूटीयूसी के अखिल भारतीय उपाध्यक्ष और राज्य अध्यक्ष कॉमरेड आर. कुमार ने सम्मेलन का उद्घाटन किया।

शराबबंदी की मांग को लेकर महिलाओं ने निकाला जुलूस

दुर्ग (छत्तीसगढ़) : 30 दिसम्बर को महिला सांस्कृतिक संगठन (एआईएमएसएस) की ओर से यहां महिलाओं ने जुलूस निकालकर जिला प्रशासक की मार्फत राज्य के मुख्यमंत्री, गृहमंत्री, आबकारी मंत्री और महिला एवं बाल विकास मंत्री को ज्ञापन सौंपा। पूर्ण शराबबंदी लागू करने, मजदूरों को 25 हजार रुपये मासिक न्यूनतम वेतन लागू करने, परित्यक्ता, विधवा महिलाओं के लिए होस्टल और राशन कार्ड की व्यवस्था करने, महिलाओं पर अत्याचार रोकने के लिए उचित कदम उठाने, महंगाई पर रोक लगाने की मांग जुलूस से उठायी गयी।

शहीद नागेन्द्र सकलानी और मोलू भरदारी की स्मृति सभा

श्रीनगर, गढ़वाल (उत्तराखंड): 11 जनवरी को यहां के नागरिकों के साथ एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) और एआईडीएसओ और वाणिज्य पार्टी द्वारा प्रजामंडल आन्दोलन के शहीद नागेंद्र सकलानी और मोलू भरदारी का 75वां शहीदी दिवस मनाया गया।

11 जनवरी 1948 को राजा के सिपाहियों ने क्रांतिकारी कॉमरेड नागेंद्र सकलानी और मोनू भरदारी को गोली मार दी थी। अगले दिन 12 जनवरी 1948 को पेशावर विद्रोह के प्रसिद्ध नायक चंद्र सिंह गढ़वाली के नेतृत्व में लोगों और आईएनए सैनिकों ने अंतिम संस्कार के लिए इन क्रांतिकारियों के शवों को राजमहल ले जाने का फैसला किया। 70 किलोमीटर की इस अंतिम संस्कार यात्रा में हजारों लोग शामिल हुए, जिसे 3 दिन की 'मूक जात्रा' कहा जाता है और इस क्षेत्र को राजा के सैनिकों से मुक्त कराया, कइयों ने आत्मसमर्पण कर दिया। लोगों के विद्रोह को भांपते हुए राजा, जो खुद को 'बोलंदा बद्रीनाथ' होने का दावा करता था, अपने गुर्गों के साथ अपने आलीशान महल से भाग गया। हर्षित लोगों ने आंसुओं के साथ शव का अंतिम संस्कार किया और राजमहल और अन्य सरकारी कार्यालयों पर तिरंगा फहराया गया था। उनके जीवन-संघर्ष की यादें उत्तराखंड के लोगों के दिलो-दिमाग में आज भी तरोताजा हैं।

सारण में जहरीली शराब पीने से हुई मौतों के खिलाफ रोष प्रदर्शन

पटना (बिहार) : सारण में जहरीली शराब पीने से 73 लोगों की हुई मौत के खिलाफ 17 दिसम्बर को एआईडीएसओ, एआईडीवाईओ तथा एआईएमएसएस के संयुक्त तत्वावधान में बुद्धा स्मृति पार्क पर विरोध प्रदर्शन किया गया। वहां आयोजित सभा की अध्यक्षता कॉमरेड अनामिका कुमारी ने की।

वक्ताओं ने इस घटना को अत्यंत दुखद बताया और मृतकों के परिवारजनों के प्रति संवेदना व्यक्त की। नेताओं ने अपने संबोधन में कहा कि यह दुखद घटना दर्शाती है कि बिहार में पूर्ण शराबबंदी के बावजूद शराब माफिया, राजनेता और पुलिस-अपराधी गठजोड़ के संरक्षण से शराब की सहज उपलब्धता ने किस कदर पैर जमा लिया है। खुद सरकार के मद्य निषेध विभाग के हवाले से मीडिया में खबर आयी है कि पक्ष और विपक्ष के नेताओं के घरों में भी शराब पकड़ी गयी है, लेकिन किसी पर कोई कार्रवाई होती नहीं दिखी है। नेताओं ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के उस बयान की कड़ी आलोचना की, जिसमें उन्होंने कहा है कि शराब पीकर मरने वालों को कोई मुआवजा नहीं मिलेगा।

वक्ताओं ने कहा कि जहरीली शराब पीकर मरने वाले बिल्कुल ही गरीब और निरीह लोग हैं। उनके परिवारों को मुआवजा अवश्य मिलना चाहिए, अन्यथा उनके परिवार में बाल-बच्चों व अन्य लोगों का भरण-पोषण कैसे होगा? वक्ताओं ने यह भी कहा कि सत्ताधारी पार्टियां ही चुनावों में, दंगा-फसाद में इन गरीबों का इस्तेमाल करने के लिए इन्हें शराब की गंदी लत का शिकार बनाती हैं। वक्ताओं ने यह सवाल उठाया कि राजनेताओं के संरक्षण के बिना यह सब कैसे चल सकता? अखबारों में भी ऐसी खबरें आई हैं। खुद मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का यह बयान आया है कि पटना में पुलिस अधिकारी की नाक के नीचे शराब बिकने की घटना हो रही है। फिर उन अधिकारियों को पकड़ कर सजा क्यों नहीं दी जाती है? दूसरी बात, जब पूरे बिहार में शराबबंदी है, तो फिर अन्य राज्यों से भी अगर शराब आ रही है, तब आपका सीआईडी और खुफिया तंत्र क्या कर रहा है?

संग्रामपुर में सभा को संबोधित करते हुए कॉमरेड कृष्णदेव साह

सभा को कॉमरेड अर्चना कुमारी, कॉमरेड सरोज कुमार सुमन, कॉमरेड निकोलाई शर्मा, कॉमरेड पवन कुमार तथा कॉमरेड शिमला मौर्य ने संबोधित किया।

बिहार के अन्य जिलों में भी इस घटना के खिलाफ विरोध प्रदर्शन हुए। मुजफ्फरपुर में कल्याणी चौक पर प्रतिवाद मार्च निकाला गया और सभा की गई। सभा को संबोधित करने वालों में एआईडीएसओ बिहार राज्य सचिव कॉमरेड विजय कुमार, एआईडीवाईओ के बिहार अध्यक्ष कॉमरेड अरविंद कुमार सहित अन्य लोग भी शामिल थे। वहीं मुंगेर जिले के संग्रामपुर में भी विरोध प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शन को मुख्य रूप से एसयूसीआई (सी) के मुंगेर जिला सचिव सह एआईकेकेएमएस के राज्य सचिव कॉमरेड कृष्णदेव साह ने संबोधित किया।

हरियाणा में परिवार पहचान पत्र की नाजायज शर्त लगाकर बुढ़ापा पेंशन आदि बंद करने का एआईकेकेएमएस ने किया विरोध

तोशाम (हरियाणा) : ऑल इण्डिया किसान खेतमजदूर संगठन के एक प्रतिनिधिमंडल ने परिवार पहचान पत्र की गलतियों के बहाने लाभार्थियों की स्कीम बीपीएल कार्ड, बुढ़ापा पेन्शन, आयुष्मान कार्ड बंद कर देने और परिवार पहचान पत्र में गलतियां ठीक करवाने में आ रही समस्या के खिलाफ 2 जनवरी को यहां हरियाणा की भाजपा सरकार के मुख्यमंत्री के नाम एक ज्ञापन एसडीएम, तोशाम की मार्फत भेजा। एआईकेकेएमएस के जिला सचिव कॉमरेड बस्तीराम, जिला प्रधान कॉमरेड रोहताश सिंह सेनी ने अपने विचार रखे।

नारनौल : हरियाणा सरकार की जनविरोधी नीतियों व अनुचित शर्तें लगाकर व मापदंड अपनाकर लोगों के बीपीएल कार्ड, बुढ़ापा पेंशन, विधवा पेंशन तथा आयुष्मान योजना से नाम काटने के विरोध में 10 जनवरी को यहां एआईकेकेएमएस ने प्रदर्शन कर ज्ञापन सौंपा।

दिल्ली में आशाओं का जुलूस

(पृष्ठ 1 का शेष)

विकास भवन-2 पर पहुंचा। वहां पर स्टेट कोऑर्डिनेटर को अपनी मांगों का ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में आशाओं का इंसेंटिव पॉइंट मुक्त करने, इंसेंटिव बढ़ाने तथा मानदेय फिक्स करने, बिना इंसेंटिव घोषित किये आशाओं से कोई काम न करवाये जाने, सभी जरूरी सुविधाएं प्रदान करने आदि मांगें सम्मलित थीं। प्रदर्शन का नेतृत्व यूनियन की महासचिव ऊषा ठाकुर ने किया, संचालन अध्यक्ष सोनू ने किया और समापन का एलान कार्यकारिणी अध्यक्ष शिक्षा राणा ने किया। मुख्य वक्ता एआईयूटीयूसी, दिल्ली के अध्यक्ष कॉमरेड हरीश त्यागी, सचिव कॉमरेड मैनेजर चौरसिया व कॉमरेड निर्मल के अलावा नीरू, सुषमा, कुसुम, सरोज, सपना ने भी संबोधित किया। प्रशासन द्वारा मांगों को पूरा न करने की स्थिति में आशाओं ने अनिश्चितकालीन हड़ताल पर जाने का संकल्प लिया।

पिलानी में मास्टरदा को दी श्रद्धांजलि

एआईडीवाईओ की ओर से 12 जनवरी को यहां आजादी आंदोलन के महान क्रांतिकारी मास्टरदा सूर्यसेन को श्रद्धांजलि दी गई।

पीड़िता महिला कोच को न्याय देने व मंत्री को पद से हटाने की मांग को लेकर प्रदर्शन

रोहतक में 4 जनवरी को प्रदर्शन करते हुए एआईडीएसओ व एआइकेकेएमएस नेता-कार्यकर्ता

रोहतक में 12 जनवरी को नागरिक कमेटी की ओर से प्रदर्शन

रोहतक (हरियाणा): ऑल इंडिया डेमोक्रेटिक स्टूडेंट्स ऑर्गेनाइजेशन (एआईडीएसओ) व ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन (एआईकेकेएमएस) ने महिला कोच को न्याय देने और मंत्री संदीप सिंह को मंत्री पद से हटाने की मांग को लेकर 4 जनवरी को यहां सुभाष चौक पर प्रदर्शन किया और महिला कोच के बारे में दिए गए मुख्यमंत्री खट्टर के बयान की कड़ी निंदा की।

मानसरोवर पार्क में लोग इकठ्ठे हुए। वहां से जुलूस नेताजी सुभाष की मूर्ति तक गया। किसान नेता एआईकेकेएमएस के प्रदेश सचिव कॉमरेड जयकरण मांडौठी और प्रदेश अध्यक्ष कॉमरेड अनूप सिंह मातनहेल, कप्तान शमशेर सिंह मलिक, एआईडीएसओ के प्रदेश अध्यक्ष कॉमरेड हरीश सैनी व प्रदेश सचिव कॉमरेड उमेश मौर्य ने सभा को संबोधित किया।

एआईकेकेएमएस के प्रदेश सचिव कॉमरेड जयकरण मांडौठी ने कहा कि जब बाड़ ही खेत को खाने लगे, तो लोग गुहार किससे लगाएंगे। प्रदेश की बेटियों को प्रदेश के रहनुमाओं से ही खतरा है। यह प्रदेश की जनता के लिए गंभीर चिंता का विषय हो गया है। जब तक संदीप सिंह मंत्री पद पर बने रहेंगे, तब तक न्यायिक जांच निष्पक्ष नहीं हो सकती। उन्होंने मांग की कि संदीप सिंह को तुरंत मंत्री पद से हटाया जाए। कप्तान शमशेर सिंह मलिक ने कहा कि हरियाणा की महिलाएं कमजोर नहीं हैं। वे अपने ऊपर हुए जुल्म के खिलाफ आवाज उठा रही हैं। हम उनके साथ हैं। खट्टर सरकार मंत्री को बचाने की कोशिश कर रही है।

एआईडीएसओ के प्रदेश अध्यक्ष हरीश सैनी ने कहा कि मुख्यमंत्री समेत भाजपा के मंत्रियों का महिलाओं के प्रति सामंती नजरिया है। बड़े पदों पर बैठे लोगों की जोर-जबर्दस्ती के खिलाफ जब महिला आवाज उठा रही है, तो सरकार में बैठे लोग उसका साथ देने की बजाय जज बनकर उसी को गलत ठहरा रहे हैं। सरकार को कामकाजी महिलाओं के लिए सुरक्षित माहौल प्रदान करना सुनिश्चित करना चाहिए। आज प्रदेश में छात्र व महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं। हर दिन महिलाओं पर जुल्म-अत्याचार होते हैं।

दोनों संगठनों द्वारा सरकार से मांग की गई कि सरकार सबसे पहले मंत्री को मंत्री पद से बर्खास्त करे, उसे गिरफ्तार कर जेल में डाले, उसके बाद महिला जूनियर कोच के साथ की गई छेड़खानी की उच्च स्तरीय न्यायिक जांच करवाई जाए। महिलाओं के साथ हो रही छेड़खानी व अपराधपर पूर्ण रोक लगाई जाए। पीड़िता कोच को सुरक्षा मुहैया करवाई जाए, जिसने मंत्री के खिलाफ सच को कहने की हिम्मत दिखाई है। मुख्यमंत्री अपना गैरजिम्मेदाराना बयान वापस लें और जनता से माफी मांगें।

रोहतक (हरियाणा) : महिला कोच को न्याय देने और यौन उत्पीड़न के आरोपी हरियाणा के खेल मंत्री संदीप सिंह को बर्खास्त कर जेल में डालने की मांग पर नागरिक कमेटी की ओर 12 जनवरी को रोहतक में जुलूस प्रदर्शन किया गया, जिसमें एआईडीएसओ कार्यकर्ता भी शामिल हुए।

कुरुक्षेत्र : 3 जनवरी को हरियाणा के गांव सारसा, जिला कुरुक्षेत्र में महिला कोच से छेड़खानी के आरोपी भाजपाई खेल मंत्री संदीप सिंह का पुतला फूंकते हुए गांव के लोग।

काकोरी के शहीदों को याद किया

जौनपुर (उ.प्र.) : आजादी आंदोलन की गैरसमझौतावादी धारा के महान क्रांतिकारियों व काकोरी घटना के वीरों—राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, राजेंद्र नाथ लाहिड़ी व रोशन सिंह के 95वें शहादत दिवस के अवसर पर छात्र संगठन एआईडीएसओ के द्वारा टी. डी. कॉलेज, जौनपुर के मुख्य द्वार पर 'साझी शहादत साझी विरासत' के नारे के साथ श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में शहीदों की फोटो पर सैकड़ों छात्र-छात्राओं, शिक्षकों व आम लोगों ने पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी और शहीदों की फोटो से निर्मित बैज धारण किये। इसके बाद नुक्कड़ सभा की गई।

पिलानी (राजस्थान) : आजादी आंदोलन की गैरसमझौतावादी धारा के महान क्रांतिकारियों व काकोरी के शहीदों राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, राजेंद्र नाथ लाहिड़ी व रोशन सिंह के शहादत दिवस पर 18 दिसम्बर को एआईकेकेएमएस द्वारा धींधवा रोड, पिलानी में श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया।

दिल्ली राज्य स्तरीय शिक्षा बचाओ सम्मेलन में पुलिस हस्तक्षेप

स्कूल क्लोजर-मर्जर व राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के खिलाफ आंदोलन जारी

दिल्ली राज्य शिक्षा बचाओ सम्मेलन में शामिल होने के लिए जाते हुए छात्र

दिल्ली : ऑल इंडिया डेमोक्रेटिक स्टूडेंट्स ऑर्गेनाइजेशन की दिल्ली राज्य कमेटी द्वारा 8 जनवरी को दिल्ली के नेताजी नगर मार्केट पार्क में स्कूल क्लोजर-मर्जर व राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के खिलाफ शिक्षा बचाओ सम्मेलन आयोजित करने का निर्णय लिया गया था। दिल्ली की सर्द हवाओं व घने कोहरे के बावजूद, एआईडीएसओ के कार्यकर्ता सुबह ही सम्मेलन की तैयारियों के लिए पहुंच गए थे, पर इसी बीच दिल्ली पुलिस द्वारा कार्यक्रम में नाजायज हस्तक्षेप किया गया। टेंट सहित तमाम व्यवस्था को तहस-नहस कर दिया गया। यहां तक कि दो कार्यकर्ताओं के फोन भी छीन लिए गए, जबकि दो हफ्ते पहले ही पास के पुलिस थाने से अनुमति मिल चुकी थी, इसके बावजूद कार्यक्रम की सुबह अनुमति को रद्द कर दिया गया। खुले आम पुलिस ने यह कारण बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के खिलाफ कोई भी चर्चा अथवा कार्यक्रम आयोजित करना मना है।

हालांकि, दिल्ली पुलिस द्वारा की गई यह कार्रवाई छात्रों की हिम्मत पस्त नहीं कर सकी। स्कूल क्लोजर-मर्जर व राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के साथ-साथ पुलिस की इस घोर अलोकतांत्रिक कार्रवाई की कड़ी निन्दा करते हुए नेताजी नगर के दो क्षेत्रों में प्रदर्शन कर सभाएं आयोजित की गईं। एआईडीएसओ के अखिल भारतीय उपाध्यक्ष कॉमरेड मुदित भटनागर, रिटायर्ड प्रिंसिपल व एआईएसईसी की दिल्ली चैप्टर की सह-सचिव शारदा दीक्षित, एआईडीएसओ की दिल्ली राज्य सचिव कॉमरेड श्रेया सहित डीयू, जेएनयू, जामिया व विभिन्न इलाकों से आए छात्रों ने सभा को संबोधित किया। सभी वक्ताओं ने स्कूल क्लोजर-मर्जर तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के खिलाफ आंदोलन तेज करते हुए शिक्षा व समाज को बचाने के संघर्ष में लोगों से जुड़ने की अपील की।

सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष की जन्म शताब्दी पर नरहड़ (राजस्थान) में एसयूसीआई (सी) ने लगायी बुक स्टाल

नेताजी जयंती मनायी

लोनी, गाजियाबाद: आजादी आंदोलन की गैरसमझौतावादी धारा के महान क्रांतिकारी नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 125वीं जयंती वर्षगांठ पर एआईयूटीयूसी, दिल्ली द्वारा 6 जनवरी को लोनी, जिला गाजियाबमद में प्रदर्शनी व बुक स्टॉल लगायी गयी और सभा आयोजित की गयी।

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2021-23
Posting at DPSO, Delhi -06 on 07–08 and 22–23 of every month, Fortnightly, Date of Publication: Jan 20, 2023

अनाज के गोदाम भरे पड़े हैं, फिर भी देश में कितने लोग मर रहे भूखे

भारत में भुखमरी पर जितनी रिसर्च हुई हैं, जितनी रिपोर्ट्स सामने आई हैं, अगर आप उन्हें एक पर एक रख दें, तो शायद आप चांद पर पहुंच सकते हैं। हर साल विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं इन रिपोर्टों को सामने लाती हैं। बार-बार गरीबी की भयानक तस्वीर सामने उभर आती है। यही देखने को मिलता है कि गरीबी लगातार बढ़ रही है, कुपोषण बढ़ रहा है, शिशु मृत्यु और प्रसूति मातृ मृत्यु भी लगातार बढ़ रही है। फिर क्या होता है?

खबर सुनते ही जहां सरकार के नेताओं और मंत्रियों को शर्म आनी चाहिए, अपनी नाकामी के लिए आत्म-ग्लानि झेलनी चाहिए और यह घोषणा करनी चाहिए कि वे गरीबी और कुपोषण को मिटाने के लिए कमर कसने जा रहे हैं, वे रिपोर्टों को नकारते रहते हैं। वे कहते हैं कि ये सब रिपोर्ट गलत हैं। इस तरह की खबरें त्रुटिपूर्ण होती हैं और इन्हें सरकार को बदनाम करने के लिए तैयार किया गया है–ठीक वैसे ही जैसे कि केंद्र में भाजपा सरकार के मंत्रियों ने इस साल की विश्व भूख सूचकांक रिपोर्ट में भारत की दुर्दशा को देखकर कहा है। उन्होंने कहा कि वास्तव में ऐसी कोई स्थिति नहीं है, देश में भुखमरी है ही नहीं। मानो सब कुछ महज एक चाल है, केवल पद्धति का खेल है!

2014 में, भारत 101 देशों की भूख सूची में 55वें स्थान पर था। 2020 में 94वें स्थान पर था। 2021 में 116 देशों में से 101वें स्थान पर था। इस बार 2022 में भारत 121 देशों में 107वें नंबर पर है। यानी एक के बाद एक रिपोर्ट में भारत भुखमरी की सूची में बद से बदतर हालत की ओर जा रहा है। इसका माने है कि भूख, कुपोषण, गरीबी चाहे कितनी भी बढ़ जाए, उस पर कोई कितनी भी उंगली उठा ले, सत्ताधारियों को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वे चुप हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि ये करोड़ों भूखे लोग लामबंद होकर उनके पास भोजन मांगने नहीं आएंगे, वे उन्हें भोजन देने के लिए मजबूर नहीं करेंगे। न ही खाना न मिलने पर वे अन्न भंडार लूटने की सोचेंगे। ऐसे ही आत्मविश्वास की वजह से वे लोगों की नींद उड़ाये रखते हैं।

भूख संबंधी रिपोर्टों में क्या होता है? भूख के स्वरूप का वर्णन, भूख के नतीजों का वर्णन होता है। जैसा कि इस बार की रिपोर्ट में दिखाया गया है, देश के 16.3 प्रतिशत लोग यानी 22.4 करोड़ लोग कुपोषण के शिकार हैं। 19.3 प्रतिशत बच्चे कद के हिसाब से कम वजन के हैं। 33.5 प्रतिशत बच्चे उम्र के हिसाब से कद में छोटे हैं। लेकिन इन सब रिपोर्टों में यह नहीं बताया जाता है कि यह कुपोषण क्यों है? उन्हें आवश्यक मात्रा में पोषक तत्व क्यों नहीं मिलते? क्या देश में खाद्यान्न उत्पादन कम हो गया है? क्या खाद्य भंडार कम हो गया है? हकीकत में ऐसा बिल्कुल नहीं है, बल्कि उत्पादन देशवासियों की कुल आवश्यकता से कहीं अधिक है। फिर भी आजादी के 75 साल बाद भी बड़ी संख्या में देशवासी अधभूखे क्यों हैं? उनके सिर पर छत क्यों नहीं है? बीमारी की दवाई क्यों नहीं मिलती है? ये रिपोर्ट इन सवालों के जवाब देने की कोशिश नहीं करती हैं।

31 दिसंबर, 2020 को कोलकाता से बांग्ला में प्रकाशित आनंदबाजार पत्रिका में छपी एक खबर से पता चलता है कि सरकारी गोदामों में चावल सहित विभिन्न खाद्यान्न ओवरफ्लो हो रहे हैं। आपात स्थिति के लिए आवश्यक 'बफर स्टॉक' के तौर पर सरकारी गोदामों में संग्रहीत चावल की मात्रा से लगभग दोगुना जमा है। सरकार ने इस अनाज को देश के भूखे लोगों तक पहुंचाने के लिए कोई प्रयास नहीं किया है। इसकी बजाय सरकार बहुत बड़ी मात्रा में अनाज को शराब बनाने वाली कंपनियों को एथेनॉल बनाने के लिए दे रही है। अभी तक गन्ने के रस, गुड़ और शीरे से एथेनॉल बनता था, वहीं खबरों के मुताबिक सरकारी योजना के तहत इस एथेनॉल को बनाने के लिए 175 लाख टन चावल-गेहूं-मक्का-जौ जैसा अनाज दिया जा रहा है। चावल और गेहूं, जो मानव अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं, का उपयोग शराब को बढ़ावा देकर राजस्व कमाने के लिए इथेनॉल के उत्पादन में किया जा रहा है। यह पूंजीवादी व्यवस्था की प्रकृति है। यहां पर्याप्त खाद्यान्न भंडार होने के बावजूद करोड़ों लोगों को भूखा रहना पड़ रहा है। क्योंकि यहां खाद्य सामग्री जीवन जीने की निहायत जरूरी चीज नहीं, बल्कि मुनाफा कमाने की वस्तु है। भले ही खाद्यान्न को जरूरत से फालतू मात्रा में संग्रहीत किया जाता है, फिर भी लोगों को भूखा ही रहना पड़ता है, क्योंकि भूखे लोगों के पास इसे खरीदने की क्षमता नहीं होती है।

शोधकर्ताओं का एक समूह भूख और गरीबी को अलग करके कुपोषण के कारणों की व्याख्या कर रहा है। शासकों द्वारा इस तरह की व्याख्या की बहुत सराहना भी की जाती है। ऐसा होना स्वाभाविक-सा है। क्योंकि यह भूख के असली कारण को छुपाता है और इसका दोष भूखे लोगों पर ही डाल देता है। इन विद्वानों के अनुसार भूख और कुपोषण का कारण गरीबी नहीं है। क्योंकि गरीब लोग हाथ में पैसा आ जाने पर खाना खरीदने से पहले मोबाइल फोन और केबल टीवी पर पैसा खर्च करते हैं। खाना खरीदने की बजाय पहले वे शैम्पू खरीदते हैं। किसने इन शोधकर्ताओं से कहा कि 'रोजाना एक अंडा खाना या न खाना इतना महत्वपूर्ण नहीं है, लेकिन शैंपू करना बहुत जरूरी है।' यानी जिनकी यह मानसिकता है, उनमें तो कुपोषण होगा ही! इसमें सरकार क्या करे! वे अमीरों के बच्चों को खाना खाने की अनिच्छा होने के कारण हीमोग्लोबिन में कमी आने का उदाहरण देकर गरीबों के बच्चों के कुपोषण की व्याख्या करते हैं! ऊधो की टोपी माधो के सिर पर रखना और किसे कहते हैं! अगर गरीब जनता सच में ही जागरूक नहीं है, अज्ञानी है, तो क्या उनकी अज्ञानता की जिम्मेदारी सरकार और मीडिया घरानों पर नहीं आ जाती है? आम लोगों में जागरुकता नहीं ला सके, तो अब तक उन्होंने क्या किया? इससे भी बड़ी महत्वपूर्ण और असल बात यह है कि गरीब लोगों को अंडे और शैम्पू में से किसी एक का चयन क्यों करना चाहिए? उनके मोबाइल, केबल का खर्चा देने के बाद खाना खाने के लिए पैसा क्यों नहीं बचता? जब एक-एक चुनाव आता है, तो वे पर्चों के पन्नों पर पन्ने रंग देते हैं, गलियों को विज्ञापनों से पाट देते हैं और भाषणों में वादों की झड़ी लगा देते हैं, जनता के तमाम कष्टों को दूर करने की बात करते हैं और विकास के सब्जबाग दिखाते हैं। वोट पड़ते ही गरीबी, कुपोषण और भुखमरी की जिम्मेदार जनता हो जाती है! उनसे कहा जाता है–तुम जागरूक नहीं हो, तुम्हें पोषण और कुपोषण का ज्ञान नहीं है, तुम अपना भला भी अच्छी तरह से नहीं समझते हो। तुम्हारा भला कौन करेगा! हालांकि शासक की यह चालाकी कोई नई नहीं है। आजादी से कुछ साल पहले जब बंगाल में भयानक अकाल पड़ा था, तब ब्रिटिश शासन के ताबेदारों का एक समूह सिनेमा हॉल के सामने भीड़ दिखाकर यह तर्क देने की कोशिश करता था कि 'कमी कहां है, लोग सिनेमा देख रहे हैं।' शासक का रंग बदल गया, दस्तूर वही है।

कुछ जरा और गंभीर स्वाभव वाले लोग छल से कहते हैं। वे इस भूख और कुपोषण के लिए सामाजिक असमानता, असमान वितरण, सरकारी नीतियों की विफलता को जिम्मेदार ठहराते हैं। यानी सरकार की नीति या नियत में कोई दोष नहीं है, जो भी दोष या असफलता है, वह उस नीति के क्रियान्वयन में है। मानो सामाजिक असमानता आसमान से टपकी हुई कोई चीज हो! धन का असमान वितरण नियति के खेल जैसा हो! यानी सर्वेक्षण, शोध, व्याख्या-विश्लेषण जो भी हों, इन सबका उद्देश्य वस्तुतः तरह-तरह के बहानों को तर्क का मुलम्मा चढ़ाकर परोसना ही होता है। स्वाभाविक रूप से समाचार पत्रों, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में भी इनका व्यापक प्रचार किया जाता है। बढ़ती भुखमरी और अधभुखे की हालत के असली कारण इस पूंजीवादी व्यवस्था पर पर्दा डालना है–जिसका आधार निजी स्वामित्व और शोषण है, और जिस व्यवस्था में दूसरों के श्रम की चोरी उचित और कानून-सम्मत है। जब करोड़ों लोग बिना इलाज के और बिना दवा के गाय और भेड़-बकरियों की तरह मर जाते हैं, करोड़ों लोग लॉकडाउन में अपनी नौकरी खो देते हैं और अपने परिवारों के साथ सड़क पर आ जाते हैं, उस समय भी पूंजीपतियों का एक समूह इस व्यवस्था की बदौलत अविश्वसनीय मात्रा में मुनाफा कमाता है। यानी इस पूंजीवादी व्यवस्था ने बहुसंख्यक लोगों को भूखे रखकर चंद पूंजीपतियों के लिए मुनाफा कमाने के सारे मौके पैदा कर दिए हैं। यह अन्यायपूर्ण भेदभाव ही शासक वर्ग के अस्तित्व का स्रोत है। उनका अस्तित्व, धन-दौलत, शानो-शौकत, ऐशो-आराम सब इसी पर निर्भर है। दूसरों की मेहनत की चोरी करके जहां उनके मुनाफे के अम्बार लगते हैं, वहीं बड़ी संख्या में लोगों को भोजन से वंचित करके और उन्हें भूखा रखकर ही उनकी धन-दौलत और शानो-शौकत बढ़ती है। इसलिए भले ही कभी-कभी भूखे लोगों के वास्ते कुछ झूठन फेंक दी जाती हो, पर भूख इस शोषणकारी पूंजीवादी व्यवस्था का एक अनिवार्य अंग है। यह पूंजीवादी व्यवस्था, पूंजीपति वर्ग के अस्तित्व से जुड़ी हुई है।

भूखे लोगों को आज यह बात स्पष्ट रूप से समझ लेनी चाहिए कि भूख का कारण सत्ताधीश चाहे जो भी बताते हों, वे कभी भी यह प्रकट नहीं होने देंगे कि यह जो शोषक-शोषितों में बंटी हुई पूंजीवादी व्यवस्था है, यह भुखमरी का वास्तविक कारण है। इसलिए भुखमरी के बारे में चाहे कितने ही तथ्य, कितनी ही दयनीय रिपोर्ट सामने आ जाएं, वे शासक के अन्यायपूर्ण शोषण और कुप्रबंधन पर एक खरोंच भी नहीं लगा सकतीं। यही कारण है कि हाल ही में भूख रिपोर्ट में बच्चों की चौंकाने वाली तस्वीर पेश करने पर भी मध्याह्न भोजन योजना (मिड-डे मील) के तहत प्रति व्यक्ति आवंटन को शर्मनाक मात्रा में बढ़ाकर प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर पर क्रमशः 48 और 72 पैसे करने में शासकों के हाथ जरा भी नहीं कांपे। करोड़ों लोगों को भूखे रखकर लाखों टन चावल-गेहूं-जौ आदि अनाजों को शराब कंपनियों को सौंपने जैसा अमानवीय काम इन्होंने यूं ही चुटकियों में कर दिया है। इसलिए इस पूंजीवादी व्यवस्था को जड़ से उखाड़ फेंके बिना गरीबी-कुपोषण-भुखमरी को कम करने का कोई वास्तविक रास्ता लोगों के सामने नहीं है। जब तक यह व्यवस्था कायम रहेगी, समाज में न केवल भुखमरी रहेगी, बल्कि धीरे-धीरे भूखे लोगों की संख्या व भुखमरी बढ़ती जाएगी। अगर शासकों से कोई छोटी-सी भी मांग मनवानी है, तो वह भूख से मर रही जनता, शोषित जनता के संगठित जोरदार जन आन्दोलन से ही संभव हो सकता है।

गुजरात के 83 फीसदी विधायक करोड़पति हैं, 22 फीसदी पर अपराध के आरोप हैं

गुजरात विधानसभा में जीते हुए नए विधायकों की संख्या 182 है। हर 10 में से 8 विधायक (83 फीसदी) करोड़ों के मालिक हैं। प्रत्येक 10 में से 2 विधायक (22 प्रतिशत) विभिन्न अपराधों के आरोपी हैं। एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) ने यह जानकारी जारी की। (टाइम्स ऑफ इंडिया, 12.12.22)

भाजपा का अखिल भारतीय चरित्र

बीजेपी के पास 29 में से सिर्फ 6 राज्यों में स्पष्ट बहुमत है

वहीं, सिक्किम की 31 में से 12, मिजोरम की 1, तमिलनाडु की 4, आंध्र की 175 में से 0, केरल की 140 में से 0, पंजाब की 117 में से 2, बंगाल की 294 में से 74, तेलंगाना में 119 में से 3, दिल्ली में 70 में से 8, ओडिशा में 147 में से 22, नागालैंड में 60 में से 12, बिहार में 243 में से 74 सीटों पर ही बीजेपी का कब्जा है।

उन राज्यों में भाजपा सीटों का स्थान जहां भाजपा गठबंधन की सरकार है

मेघालय की 60 में से 2, जम्मू-कश्मीर की 87 में से 25, गोवा की 40 में से 13 सीटें। पूरे देश की कुल 4139 विधानसभा सीटों में से बीजेपी के पास 1516 सीटें हैं, जिनमें से गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, यूपी, एमपी, राजस्थान जैसे 6 राज्यों में 950 सीटें हैं। साफ है, बीजेपी की देश में कोई लहर या तूफान नहीं है. (सोशल मीडिया से प्राप्त)

''नारी शक्ति''...

(पृष्ठ 1 का शेष)

में एक। एनसीआरबी की रिपोर्ट के अनुसार, महिलाओं के प्रति अपराध के दर्ज किये गये मामलों में ज्यादातर 'पति और उसके रिश्तेदारों द्वारा क्रूरता' (31.8 प्रतिशत), उसके बाद 'शील भंग करने के इरादे से महिलाओं पर हमले (20.8 प्रतिशत), 'महिलाओं के अपहरण और भगा ले जाने की घटनाएं' (17.6 प्रतिशत) और 'बलात्कार' (7.4%) के हैं। प्यू (पीईडब्ल्यू) रिसर्च सेंटर द्वारा तैयार की गई एक नई रिपोर्ट में खुलासा हुआ है कि भारत में कन्या भ्रूण हत्या के लिए लापता लड़कियों की सबसे बड़ी संख्या हिंदुओं में है। उनके विश्लेषण के अनुसार, 2000 से 2019 तक कन्या भ्रूण हत्या के परिणामस्वरूप भारत में कम से कम 90 लाख लड़कियां 'लापता' हैं। तुलना करने के लिए, यह संख्या उत्तराखंड की पूरी आबादी से थोड़ी कम है।

इतना ही नहीं। राष्ट्रीय महिला आयोग को 2020-21 में महिलाओं से घरेलू-हिंसा की 26,513 शिकायतें प्राप्त हुईं, 2019-20 में दर्ज 20,309 शिकायतों की तुलना में 25.09 प्रतिशत की वृद्धि हुई। 2021 में महिलाओं के खिलाफ अपराध के दर्ज हुए कुल मामलों में से लगभग 31% घरेलू दुर्व्यवहार के थे, इसके बाद उन पर मारपीट और छेड़खानी के 20.8% मामले थे। प्रति लाख महिला जनसंख्या पर अपराध के दर्ज मामलों की दर 2020 में 56.5 से बढ़कर 2021 में 64.5 हो गई। राष्ट्रीय महिला आयोग को 2020-21 में महिलाओं से घरेलू-हिंसा की 26,513 शिकायतें मिलीं, जो 2019 में दर्ज 20,309 शिकायतों की तुलना में 25.09 प्रतिशत की वृद्धि है। दहेज प्रताड़ना के कारण हर दिन 20 महिलाओं की मौत हो जाती है। या तो उनकी हत्या कर दी जाती है या आत्महत्या के लिए मजबूर कर दिया जाता है। हाल ही में, क्रूरता ने एक नया आयाम ले लिया है। देश के किसी हिस्से में दूसरे साथी द्वारा अपने एक अंतरंग साथी (किसी लिव-इन-पार्टनर) की हत्या बेहद क्रूर तरीके से की जाती है। हत्या की गई महिलाओं के शवों को बोटी-बोटी काट कर कई जगहों पर फेंक दिया गया। दूसरी जाति या धर्म के लड़के से प्यार करने पर माता-पिता अपनी ही बेटियों को मारने का चरम कदम उठा रहे हैं। भारत में हर साल महिलाओं पर करीब 300 एसिड अटैक की रिपोर्ट आती है। महिलाओं के खिलाफ लोगों की मानसिकता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि 65% भारतीय पुरुषों का मानना है कि महिलाओं को परिवार को एक साथ रखने के लिए हिंसा को सहन करना चाहिए और महिलाएं कभी-कभी पिटने की पात्र होती हैं।

शिक्षा और स्वास्थ्य के बारे में भारत में महिला साक्षरता दर पुरुषों से पीछे है, क्योंकि पुरुषों की 80% साक्षरता की तुलना में महिलाओं की साक्षरता 62.3% है। भारत में कई लड़कियों की कम उम्र में शादी कर दी जाती है और सामाजिक दबाव या कम उम्र में गर्भधारण के कारण वे अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद स्कूल छोड़ देती हैं। इस वजह से 15-16 साल की उम्र की 13.5 फीसदी लड़कियां स्कूल से बाहर हो जाती हैं। बाल श्रम और स्त्री स्वच्छता उत्पादों की कमी लड़कियों को स्कूल आने से रोकती है और निरक्षरता दर और शिक्षा की निरंतर कमी में योगदान करती है। 2015 के एक अध्ययन में पाया गया कि लगभग 28.2% बच्चे, जिनकी माताएं अनपढ़ हैं, उनका शैक्षिक स्तर प्राथमिक या निम्न है, जबकि केवल 1% से कम बच्चे, जिनकी माताओं ने उच्च माध्यमिक शिक्षा पूरी की है, उनका शैक्षिक स्तर प्राथमिक या निम्न है। चूंकि भारत में माताएं अशिक्षित रहती हैं, इसलिए वे अपने बच्चों की शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव डालती हैं, इस प्रकार शैक्षिक असमानताएं एक चक्रीय, पीढ़ी दर पीढ़ी वाला मुद्दा बन जाती हैं। यही हाल महिलाओं के स्वास्थ्य का है। प्रजनन आयु की एक चौथाई भारतीय महिलाएं कुपोषित हैं, जिनका बॉडी मास इंडेक्स (बीएमआई) 18.5 किग्रा/एम2 से कम है। 66.4% महिलाएं खून की कमी (एनीमिया) से पीड़ित हैं।

भारतीय महिलाओं की इस दुर्दशा, उनके दु:ख-दर्द और उनसे दुर्व्यवहार का कारण सामाजिक-राजनीतिक वास्तविकता में निहित है। भारत में महिलाएं अभी भी पुराने सड़े-गले सामंती विचारों और रीति-रिवाजों में जकड़ी हुई हैं। वे अभी भी पुरुष की निजी संपत्ति मानी जाती हैं। यह लड़कियों के लिए ऐसा भेदभाव है, जो पतनोन्मुख मरणासन्न वैश्विक साम्राज्यवाद- पूंजीवाद, जिसका शासक भारतीय पूंजीवाद एक अभिन्न अंग है, उसमें उनके जन्मते ही, जब वे पालने में होती हैं तभी से शुरू हो जाता है। इसलिए पुराने जमाने की गयी-गुजरी भेदभावपूर्ण सामंती मानसिकता और सामाजिक पाबंदी-मनाहियों के साथ किया जाने वाला समझौता ही महिलाओं की अधीनता निर्धारित करता है। इसमें मरणासन्न पूंजीवाद-साम्राज्यवाद से उपजी उपभोक्तावाद की सड़ी-गली सोच जुड़ जाती है। सामंती पितृसत्ता के खुमार के साथ मिलकर इस उपभोक्तावादी मानसिकता ने महिलाओं के वस्तुकरण के विचार को जन्म दिया है। यही समस्या की जड़ है।

आइए हम महान लेनिन के एक अमूल्य उद्धरण के साथ समाप्त करते हैं: ''क्या इसका इससे भी ज्यादा प्रत्यक्ष प्रमाण कोई और हो सकता है कि एक महिला को किसी घरेलू काम, मसलन तुच्छ, उबाऊ, पस्त कर देने वाले, समय-खपाऊ काम में खपते-पिसते हुए एक पुरुष शांत-भाव से देखता रहता है-उसकी हिम्मत को पस्त होते हुए, उसके दिमाग को कुंद होते हुए, उसके दिल की धड़कन को मंदी पड़ते हुए और उसके इरादों को कमजोर होते हुए देखता रहता है?.. मैं जो कह रहा हूं, वह महिलाओं के विशाल बहुसंख्या पर लागू होता है, मजदूरों की पत्नियों पर भी, चाहे वे दिन-भर कारखानों में खटती हों।

बहुत ही कम पति,-यहां तक कि सर्वहारा वर्ग के पति भी इनमें शामिल हैं-यह सोचते कि अगर वे इस 'औरतों के काम' में हाथ बंटायें, तो अपनी पत्नियों के बोझ और चिंताओं को कितना हल्का कर सकते हैं या कि वे उन्हें इन बोझ-चिंताओं से पूरी तरह से मुक्त कर सकते हैं। लेकिन नहीं, यह तो पुरुष के 'विशेषाधिकारों और शान' के खिलाफ होगा। वे तो सुकून और आराम की मांग करते हैं। एक महिला के गृहस्थ जीवन का मतलब है रोजमर्रे के हजार तुच्छ कामों में, तुच्छ बातों में अपने को नित्यप्रति कुर्बान करते रहना। उसके पति के, उसके 'पति परमेश्वर और स्वामी' के पुरातन अधिकार बिना परिवर्तन के बने रहते हैं और उन पर ध्यान नहीं जाता। वस्तुत: उसकी दासी अपनी दासता का ही बदला लेती है, वह भी छिपे रूप में। महिलाओं का पिछड़ापन और अपने पति के क्रांतिकारी आदर्शों की समझदारी का अभाव पतियों (पुरुषों) की जुझारू भावना और संघर्ष के प्रति दृढ़निश्चयता को पीछे खींचने का काम करता रहता है। वे उन दीमक जैसे कीड़ों की तरह हैं, जो अन्दर पनपते हैं और कुतरते हैं-अदृश्य रूप से, धीरे-धीरे, लेकिन निश्चित तौर पर अपना काम करते रहते हैं। मैं मजदूरों की जिंदगी को जानता हूं और केवल किताबी तौर पर नहीं। महिलाओं के बीच हमारा कम्युनिस्ट काम और आम तौर पर हमारा राजनीतिक काम पुरुषों के बीच बहुत ज्यादा शिक्षा-दीक्षा की मांग करता है। हमें स्वामी-दासी के पुराने दृष्टिकोण को पार्टी और समाज, दोनों में से जड़ से उखाड़ फेंक देना चाहिए। यह हमारे राजनीतिक कामों में से एक है और यह एक ऐसा कार्यभार है, जिसकी उतनी ही आसन्न आवश्यकता है, जितनी कि मेहनतकश महिलाओं के बीच पार्टी कार्य को आगे बढ़ाने के लिए गहन सिद्धांतिक और व्यवहारिक प्रशिक्षण पाये हुए पुरुष और महिला कॉमरेडों का एक स्टाफ बनाने की।''

(स्रोत: Time.com 27-06-19, महिलाओं के खिलाफ हिंसा, WHO दिनांक 09-03-21, shethepeople 21-04-20, महिलाओं के खिलाफ अपराध-कानूनी सेवाएं भारत, डाउन टू अर्थ 28-12-20, hwnews 24 -01-22, आउटलुक 30-08-22, बीबीसी 13-09-22, 'बैलार्डब्रीफ', बीएमसी पोषण 22-08-22, द वायर 06-09-22, प्रेस सूचना ब्यूरो, भारत सरकार, 03-10- 22, क्लारा जेटकिन द्वारा 'लेनिन ऑन द वूमेन क्वेश्चन')

किसान-विरोधी है भावांतर योजना

किसानों को उनकी उपज का वाजिब दाम देने के नाम पर शुरू की गई भावांतर भुगतान योजना या भावांतर भरपाई योजना, दरअसल किसानों की प्रत्येक उपज पर एमएसपी के सही निर्धारण और एमएसपी की कानूनी गारंटी सहित सरकारी खरीद की मांग पर ठंडा पानी डालने की एक सोची-समझी साजिश है। बताया जा रहा है कि भावांतर भुगतान योजना के तहत न्यूनतम समर्थन मूल्य और बाजार भाव के बीच के अंतर का भुगतान करने की जिम्मेदारी सरकार अपने ऊपर लेगी। सरकार का मानना है कि इस योजना के माध्यम से सरकार किसानों की उपज पर न्यूनतम समर्थन मूल्य उपलब्ध कराएगी।

हैरत की बात तो यह है कि कुछ किसान नेता और संगठन इस योजना को किसानों के लिए क्रांतिकारी कदम बता रहे हैं, लेकिन इस योजना का अगर बारीकी से विश्लेषण करें तो देखा जाएगा कि यह योजना :-

1. किसानों की उपज को एमएसपी पर खरीदने की सरकार की जिम्मेदारी को खत्म करती है।

2. जब सरकार स्वयं खरीद न करके उसको बाजार में बेचने को प्रोत्साहित करेगी तो मायने होगा कि हमारे देश की पीडीएस व्यवस्था (राशन वितरण प्रणाली) खत्म होगी।

3. अगर अगली सरकार इस योजना को बंद कर दे तो बगैर सरकारी खरीद के एमएसपी की घोषणा औपचारिकता बनकर रह जाएगी और संभवत: सरकार एमएसपी की घोषणा करना ही बंद कर दें ।

4. सरकार द्वारा भावांतर राशि तय करने का तरीका भी किसान हितैषी और पारदर्शी नहीं है। इसके तहत उस नियत तिथि में जिसमें कि किसान ने अपनी उपज को बेचा है, उस तिथि में पड़ोसी राज्यों की दो मंडियों के भाव के आधार पर एक मॉडल रेट निकालकर उस किसान की उपज का भावांतर तय किया जायेगा। जबकि उन मण्डियों में भी उपज की नीलामी समर्थन मूल्य से कम पर ही होना तय है। पहले पहल इस योजना की घोषणा भाजपा की वाजपेयी सरकार में रहे कृषि मंत्री राजनाथ सिंह ने हरियाणा में हांसी में सम्पन्न हुई एक जनसभा में की थी। हमने इसका कड़ा विरोध किया था। अत: इसे आगे नहीं बढ़ाया गया। भाजपा की मोदी सरकार ने जब से मध्यप्रदेश से पुन: इसे लागू करने की घोषणा की है, तब से हरियाणा समेत विभिन्न सरकारें इस स्कीम को प्रचारित-प्रसारित कर रही हैं। हरियाणा में इस बार बाजरे की फसल 2,350 रुपये क्विंटल के सरकारी रेट पर शायद ही कहीं खरीदी गयी हो। खट्टर सरकार द्वारा भावान्तर स्कीम के तहत भरपाई के लिए 450 रुपये प्रति क्विंटल के हिसाब से पैसा किसानों के खाते में डाला गया, जबकि किसानों का बाजरा मण्डी में 1700 रुपये क्विंटल के हिसाब से ही बिका। जाहिर है किसानों को सरकारी रेट से प्रति क्विंटल 200 रुपये कम मिले हैं। रसोई गैस की तर्ज पर कल किसी दिन सरकार किसानों के खाते में पैसा डालना बन्द कर दे, तो नतीजा होगा एमएसपी की समाप्ति।

इस प्रकार यह योजना किसी भी तरह किसानों के पक्ष में नहीं है। आखिर यह योजना किसके पक्ष में है? यह योजना फायदा किसे पहुंचाएगी? जाहिर है कि अनाज खरीदी में लगी देशी-विदेशी कंपनियां, जिन्हें सरकारी खरीद के दबाव में किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य देना चाहिए, वे अब किसानों से औने-पौने दामों पर उपज खरीदेंगी और किसान इसलिए विरोध नहीं करेगा कि उसका भावांतर सरकार उसे देगी।

किसान को लग सकता है कि यह योजना किसान-हितैषी है, लेकिन जरा गौर करने पर पाएंगे कि कृषि उपज का वाजिब भुगतान, जो कंपनियों को करना चाहिए था, उसको सरकार करेगी यानी अब सरकार पूंजीपति वर्ग के प्रति अपनी वफादारी निभाते हुए सरकारी खजाने से उनका बोझ हल्का करेगी और मुनाफाखोर कंपनियां सरकारी मदद से उस उपज पर और भी ज्यादा मुनाफा कमायेंगी। तब तो यह योजना कंपनी-हितैषी हुई। यह किसानों के पक्ष में और एमएसपी पर किसान की उपज की खरीदी के पक्ष में कैसे हुई? बल्कि एक समय अगर सरकार इस योजना को बंद कर दें या सरकार बदल जाए, तो किसानों का क्या होगा? इसीलिए किसानों को भावांतर भरपाई योजना जैसी योजनाओं से सचेत रहना होगा और अपनी उपज के वाजिब दाम के लिए एमएसपी की कानूनी गारंटी, तमाम कृषि उपज की सरकारी खरीद सहित खाद्यान्नों के संपूर्ण राज्य व्यापार को लागू करने की अपनी मांग को लेकर लगातार संघर्ष करना होगा।

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2021-23
Posting at DPSO, Delhi -06 on 07-08 and 22-23 of every month, Fortnightly, Date of Publication: January 20, 2023

महाराष्ट्र बिजली कर्मचारियों के वीरतापूर्ण संघर्ष पर

एआईयूटीयूसी ने दी उन्हें बधाई

अडानी इलेक्ट्रिसिटी नवी मुंबई लिमिटेड को समानांतर लाइसेंस देने के प्रतिगामी अधिनियम की कड़ी निंदा करते हुए और सरकार के नाजायज और जनविरोधी फैसले के खिलाफ महाराष्ट्र के बिजली श्रमिकों के वीरतापूर्ण संघर्ष के कारण हुई उनकी जीत पर बधाई देते हुए एआईयूटीयूसी के महासचिव कॉमरेड शंकर दासगुप्ता ने 4 जनवरी को निम्नलिखित बयान जारी किया है:

"अडानी इलेक्ट्रिसिटी नवी मुंबई लिमिटेड को समानांतर लाइसेंस देने के खिलाफ महाराष्ट्र पावर सेक्टर के बिजली कर्मचारियों और इंजीनियरों के साझे मंच ने एमईएसएम अधिनियम -2017 लागू होने की घोषणा से उत्पन्न खतरे की परवाह न करते हुए 4 जनवरी 2023 की आधी रात से 72 घंटे की हड़ताल पर चले गये।

यह बहुत खुशी की बात है कि 86000 नियमित और 42000 ठेके पर काम करने वाले कर्मचारियों की मुकम्मल हड़ताल को देखते हुए राज्य सरकार को महाराष्ट्र बिजली क्षेत्र के निजीकरण का अपना फैसला वापस लेने को मजबूर होना पड़ा है।

कहने की जरूरत नहीं है कि महाराष्ट्र के बिजली कर्मचारियों का यह ऐतिहासिक संघर्ष निश्चित रूप से अन्य सार्वजनिक क्षेत्रों के श्रमिकों को विनिवेश और निजीकरण के खिलाफ अपने संघर्ष को तेज करने के लिए प्रेरित करेगा।

महाराष्ट्र बिजली कर्मचारियों के वीरतापूर्ण संघर्ष पर उन्हें बधाई देते हुए उन्होंने महाराष्ट्र राज्य सरकार से आग्रह किया कि वह इस कोर सेक्टर का निजीकरण करने और महाराष्ट्र के बिजली कर्मचारियों व लोगों के हितों को खतरे में डालने से बाज आये।

सीधे तौर पर सांप्रदायिक हिंसा भड़काऊ है मोहन भागवत का बयान – एसयूसीआई (सी)

एसयूसीआई (सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभास घोष ने 13 जनवरी 2023 को जारी बयान में कहा:

"अपने मुखपत्र में आरएसएस प्रमुख का बयान न केवल अत्यंत निंदनीय है, बल्कि भयप्रद भी है। हिंदुत्व ब्रिगेड द्वारा इस या उस बहाने लगातार हमले, अपमान, प्रताड़ना और यहां तक कि हत्या किए जाने पर जब अल्पसंख्यक समुदाय दहशत में है, तो फिर आरएसएस प्रमुख को कहां से यह लगा कि वे 'सर्वोच्चता की भावना' दिखा रहे हैं? यह और कुछ नहीं, बल्कि एक उद्देश्य से प्रेरित झूठ है। इसके अलावा, इस बयान के जरिये उन्होंने 'मुसलमानों के खिलाफ हिंदुओं द्वारा न्यायपूर्ण युद्ध' के रूप में सांप्रदायिक रूप से हिंसक मानसिकता को उचित ठहराने और आगे बढ़ाने की कोशिश की। हम सभी तबकों के लोगों से आह्वान करते हैं कि वे आगे आएं और इस घिनौनी साजिश के खिलाफ आवाज उठाएं।"

26 दिसंबर को घाटशिला स्थित मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष विचार अध्ययन केंद्र में एसयूसीआई (सी) की यूपी राज्य सांगठनिक कमेटी द्वारा आयोजित राजनीति शिक्षण शिविर को संबोधित करते हुए एसयूसीआई (सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभास घोष

नेताजी सुभाष चंद्र बोस 125वीं जयंती समारोह कमेटी, बिहार की तरफ से 15 जनवरी को पटना के गांधी संग्रहालय में आयोजित संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए एसयूसीआई (सी) की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य कॉमरेड अरुण कुमार सिंह और इसमें शिरकत करते हुए जनसमूह का एक अंश

जोशीमठ धंसने की खबरों पर एसयूसीआई (सी) ने जतायी गहरी चिंता

एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के उत्तराखंड राज्य संयोजक कॉमरेड मुकेश सेमवाल ने उत्तराखंड के चमोली जिले के खूबसूरत पहाड़ी शहर जोशीमठ की जमीन धंसने की दुर्भाग्यपूर्ण खबर पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए 6 जनवरी 2023 को जारी एक प्रेस बयान में कहा :

जोशीमठ इलाके में घरों, भवनों, सड़कों व मंदिरों की दीवारें दरक गई हैं, कुछ होटल अन्य भवनों पर झुक गए हैं और जगह-जगह नए जल स्रोत उभर आए हैं। ये चिंताजनक घटनाक्रम वहां लंबे समय से रह रहे हजारों लोगों के जीवन और रोजी-रोटी को खतरे में डाल रहे हैं। ढहते घरों के मलबे के नीचे दबे जाने की आशंका से स्थानीय लोग या तो दूसरी जगह चले जाने या इस कड़ाके की ठंड में खुले में रहने का विकल्प चुनने लगे हैं।

यह खतरा अप्रत्याशित नहीं था। भूविज्ञानी लंबे समय से चेतावनी देते रहे हैं कि धौलीगंगा और अलकनंदा नदियों के संगम, विष्णुप्रयाग से उच्च ढाल के साथ बहती हुई धाराएं आती हैं, उनके पार आड़ी-तिरछी पर्वत श्रृंखलाओं पर स्थित होने के कारण जोशीमठ जैसी जगहों पर भूस्खलन-जमीन के धंसाव और भूकंप की संभावना रहती है। दरअसल बहुत पहले, 1976 में चेता दिया गया था कि शहर एक प्राचीन भूस्खलन स्थल पर स्थित है और इसलिए सुरक्षित नहीं है। एक हालिया रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि जोशीमठ के आस-पास का क्षेत्र भारी बोझिल सामग्री की मोटी परतों से ढका हुआ है। जिस भूस्खलन के मलबे पर शहर बसाया गया था, इस क्षेत्र की चट्टानें पुराने भूस्खलन के मलबे, जिसमें बाउलडर, नीस चट्टानें और ढीली मृदा शामिल है, से ढकी हुई हैं, जिनकी धारण क्षमता कम है। विशेषज्ञों ने बहुत अर्से पहले से यह चेतावनी दी हुई है कि यह बड़े पैमाने के निर्माण को झेल नहीं सकती हैं। फिर भी, सभी चेतावनियों की अनदेखी करते हुए राज्य और केंद्र सरकार दोनों ने, चाहे वे भाजपा की हो या कांग्रेस की, अनियंत्रित ढंग से बड़े-बड़े बोल्डर और अन्य अस्थायी पथरीले स्पोर्ट इस्तेमाल कर बड़े-बड़े भवन और होटल बनाने की इजाजत दी। नागरिक संचार और ज्यादातर सैन्य परिवहन को आसान बनाने के लिए राष्ट्रीय राजमार्ग के चौड़ीकरण ने पिछले कुछ दशकों में ढलानों को अत्यधिक अस्थिर बना दिया है। इन सड़कों को पिछले भूस्खलन के मलबे पर बनाया गया है, क्योंकि ऐसी ऊंचाई पर सड़कें बनाने, जहां चट्टान मजबूत होती है, पर ज्यादा लागत आती है। यहां तक कि इस पैरा-ग्लेशियर क्षेत्र पर मेगा हाइड्रो-इलेक्ट्रिक परियोजनाओं का निर्माण जारी है। सर्वोपरि, 2013 में हिमालयी सूनामी और 2013 में ऋषिगंगा बाढ़ आपदा में आई गाद-कीचड़ और घटिया जल निकासी प्रणाली आदि ने मिलकर स्थिति को और भी बदतर बना दिया है।

उत्तराखंड को फरवरी 2021 में एक मानव निर्मित आपदा का सामना करना पड़ा था, जब नंदा देवी ग्लेशियर का एक हिस्सा टूटकर लुढ़क पड़ा था। यह हिमस्खलन और सैलाब का सबब बना था और जोशीमठ के पास 13.2 मेगावाट की ऋषिगंगा जलविद्युत परियोजना और आस-पास के तेरह गांवों को जोड़ने वाली सड़कों व पांच पुलों को बहा ले गया था। परियोजना स्थलों में फंसे मजदूरों सहित कई लोगों की जान चली गइ थीं। मौजूदा हालात में गंगा और उसकी सहायक नदियों के विभिन्न खंडों पर 70 से अधिक छोटी-बड़ी परियोजनाओं पर काम चल रहा है। इन बुनियादी ढांचा परियोजनाओं पर काम करने वाले हजारों मजदूर पहाड़ों में होने वाले विकास के इस ठेकेदार-आधारित मॉडल के कारण गुमनाम, बिना चेहरे की शिनाख्त के मरने को मजबूर हैं। फिर भी सरकारी प्रशासन मूकदर्शक बना हुआ है और बढ़ते पर्यटन से लाभान्वित होने वाले बड़े कारोबारी घरानों के कारोबारी हित में अंधाधुंध शहरीकरण और वनों की कटाई को बेरोकटोक चलने दे रहा है और इस पर्यावरण संवेदनशील क्षेत्र को एक ऊर्जा केंद्र में बदल रहा है। स्थानीय लोगों और वैज्ञानिकों के विरोध को आसानी से नजरअंदाज कर दिया जाता है, क्योंकि मुनाफाखोर कार्पोरेट कंपनियों के स्वार्थ गरीब असहाय स्थानीय निवासियों के विलाप और दुख-तकलीफों पर भारी पड़ जाते हैं। हमेशा की तरह, सरकार कुछ अस्थायी अल्पकालिक राहत उपाय करके और दीर्घकालिक समाधानों पर ढक्कन लगाकर लोगों के गुस्से को शांत करने की कोशिश करती है।

जोशीमठ के पीड़ित लोगों द्वारा चलाए गए आंदोलन का पूर्ण समर्थन करते हुए उन्होंने सभी संवेदनशील बुद्धिजीवियों, वैज्ञानिकों और नागरिकों से भी अपील की कि जोशीमठ के लोगों के उचित बचाव और पुनर्वास के लिए आगे आएं और सरकार पर दबाव डालें तथा वैज्ञानिक कमेटियों की सिफारिश का उल्लंघन करने वाली सभी परियोजनाओं पर तुरंत प्रतिबंध लगाने, जोशीमठ जैसी सुरम्य प्राकृतिक सौगात को बचाने और उत्तराखंड की जनता के विकास के स्थायी समाधान करने की मांग करें।

Printed and published by Com. Satyawan on behalf of the Central Committee of the Socialist Unity Centre of India (Communist) and printed at M/s Balaji Offset Printers, 315/21, Shahzada Bagh, Daya Basti, Delhi and published at 3A/38, WEA, Satnagar, Karol Bagh, New Delhi-110005. Editor: Com. Satyawan, Member, Central Committee, SUCI(C)."
Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com फोन नं. : 9416763089, 9868350503